यीशु के संदेश

लेखक :
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :

मसीह् की कलीसिया

पोस्ट बॉक्स नं० ३८१५

नई दिल्ली-११००४९

प्रथम संस्करण :

१९८२

मुद्रक :

प्रिन्ट इन्डिया

ए-३८/२; फेस I इन्डस्ट्रीयल एरिया,

मायापुरी, नई दिल्ली-११००६४.

SERMONS ON JESUS

Radio Sermons
in Hindi

By
Sunny David

Published by :
Church of Christ
Post Box 3815
New Delhi-110049

Contents

1.	The Wonderful Birth of Jesus	9
2.	The Wonderful Life of Jesus (1)	15
3.	The Wonderful Life of Jesus (2)	21
4.	The Wonderful Names of Jesus	28
5.	The Mind of Jesus	34
6.	Jesus was The Great Teacher	40
7.	The New Life in Jesus	46
8.	Why Should I believe in Jesus ?	52
9.	The Kingdom of Jesus	58
10.	When Jesus Died	64
11.	The Resurrection of Jesus	70
12.	Jesus Came and is Coming Again	76

अन्य उपलब्ध रचनाएं

१. पन्द्रह प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
२. बीस लघु रेडियो सदेश
३. मुक्ति के संदेश
४. मसीही संदेश
५. हम किसके पास जाएं ?
६. यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे···
७. जीवन के वचन
८. पुराने नियम के अनुसार
९. नए नियम के अनुसार
१०. मसीह के दावे
११. यीशु के दृष्टान्त
१२. ऐसा बड़ा उद्धार
१३. वस्तुएं जो विशाल हैं
१४. मसीह का सुसमाचार
१५. क्या यह सच है ?
१६. सुसमाचारबोने वाला
१७. बाइबल प्रवचन

सत्य सुसमाचार

के साप्ताहिक कार्यक्रम रेडियो श्री लंका से
सुनिये सप्ताह में चार बार प्रत्येक :

मंगलवार	— रात को	९ : ०० बजे
बृहस्पतिवार	— रात को	९ : ०० बजे
शुक्रवार	— रात को	९ : ०० बजे
रविवार	— दिन में	१ : ३० बजे

वक्ता :

सनी डेविड

प्रस्तुतकर्त्ता :

मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली-११००४९

परिचय

अब तक यीशु के सम्बन्ध में कितनी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं ? केवल परमेश्वर ही इस प्रश्न का उत्तर जानता है। यीशु का प्रचार करने का अर्थ है उसके आदि से विद्यमान् होने का प्रचार करना। यीशु का प्रचार करने का अर्थ है उसके अद्भुत जन्म तथा जीवन और उसके आश्चर्यकर्मों का प्रचार करना। इसका अर्थ है उसकी मृत्यु और जी उठने तथा उसकी शिक्षाओं वा प्रतिज्ञाओं और उसके फिर से वापस आने का प्रचार करना।

विश्वास करने के लिये ज्ञान की आवश्यक्ता है। किन्तु विश्वास का अभिप्राय यह ही नहीं है कि यीशु को मानसिक रूप से परमेश्वर का पुत्र मान लिया जाए। यदि कोई मनुष्य सचमुच में यीशु में विश्वास करता है, तो वह उसकी आज्ञाओं को भी मानेगा, अर्थात् यीशु मनुष्य को जो करने को कहता है वह उसे करेगा। प्रत्यक्ष ही है कि जो मनुष्य यीशु की आज्ञा का पालन नहीं करता वह उसमें अपने अविश्वास को प्रगट करता है।

प्रस्तुत पुस्तक में जिन प्रवचनों को आप पढ़ने जा रहे है इन्हें लेखक ने इस उद्देश्य स लिखा है कि जो लोग यीशु में वास्तव में विश्वास नहीं करते इन्हें पढ़कर वे उसमें विश्वास लाए और जो उसमें विश्वास करते हैं उनका विश्वास इन प्रवचनों को पढ़कर उसके भीतर और अधिक दृढ़ हो जाए।

इन्हीं शब्दों के साथ, लेखक की इस नई रचना को पढ़ने के लिये मैं आपको निमन्त्रण देता हूं।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

विषय सूची

पृष्ठ सं०

१.	यीशु का अद्‌भुत जन्म	९
२.	यीशु का अद्‌भुत जीवन (१)	१५
३.	यीशु का अद्‌भुत जीवन (२)	२१
४.	यीशु के अद्‌भुत नाम	२८
५.	यीशु का स्वभाव	३४
६.	यीशु एक महान् शिक्षक था	४०
७.	यीशु में नया जीवन	४६
८.	मैं यीशु में विश्वास क्यों करूं ?	५२
९.	यीशु का राज्य	५८
१०.	जब यीशु की मृत्यु हुई	६४
११.	यीशु का जी उठना	७०
१२.	यीशु आया और फिर आ रहा है	७६

१

यीशु का अद्भुत जन्म

मित्रो:

आज हम अपने पाठ में प्रभु यीशु मसीह के सम्बन्ध में देखेंगे। यूँ तो अकसर हम अपने पाठों में प्रभु यीशु के उपदेशों और उसके सामर्थपूर्ण कामों के ऊपर विचार करते हैं। परन्तु आज हम स्वयं प्रभु यीशु के सम्बन्ध में बड़े ही सक्षिप्त रुप में कुछ आवश्यक बातों के ऊपर विचार करेंगे। मैं जानता हूं, कि हम में से बहुतेरे लोग प्रभु यीशु के बारे में जानना चाहते हैं। क्योंकि जगत में मनुष्यों में यीशु का जीवन सभी मनुष्यों से निराला था। उसका पृथ्वी पर जन्म लेना, उसके कार्य और उसकी मृत्यु और फिर से जी उठना, इन सभी बातों में इतना अधिक निरालापन है कि ये हमें अपनी ओर आकृषित करती हैं, और हम यीशु के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं। आईए, आज हम यीशु के जन्म से सम्बन्धित कुछ बातों के ऊपर विचार करें।

यीशु की माता का नाम मरियम था। मरियम यरुशलेम में गलील के नासरत नाम के एक छोटे से नगर में रहती थी। मरियम की मंगनी यूसुफ़ नाम के एक पुरुष के साथ हो चुकी थी। एक दिन जब मरियम अपने घर में थी, तो एकाएक एक स्वर्गदूत उसके पास आ खड़ा हुआ, और वह उस से यों कहने लगा, कि आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। मरियम उसे देखकर

अत्यन्त डर गई और सोचने लगी कि इसका क्या अभिप्राय है। और अभी वह सोच ही रही थी कि स्वर्गदूत ने उससे कहा, कि, "हे मरियम भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान् होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसे देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।" किन्तु, "मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा ? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।" इस पर, "स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा" (मत्ती १:२६-३५)। कभी-कभी कुछ लोग यह जानना चाहते हैं, कि यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र क्यों कहते हैं, क्योंकि परमेश्वर तो मनुष्य नहीं है कि उसके पुत्र हो ? किन्तु अभी जिन बातों को हमने पवित्र बाइबल में से पढ़ा है उन से हम देखते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र इसलिये है, क्योंकि वह परमेश्वर की सामर्थ से उत्पन्न हुआ था।

परन्तु यीशु के जन्म से पूर्व जब मरियम के मंगेतर यूसुफ़ को यह पता चला कि मरियम गर्भवती है, तो उसने अपने मन में यह निश्चय किया कि वह अब मरियम से विवाह नहीं करेगा। परन्तु अभी वह अपना निश्चय किसी पर प्रगट भी न कर पाया था कि परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उस पर प्रगट होकर उस से यों कहा, कि, "हे यूसुफ़, दाऊद की संतान् तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्रात्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" (मत्ती १:२०-२१)।

यहां से हम देखते हैं कि परमेश्वर के पुत्र यीशु के पृथ्वी पर जन्म लेने का कारण यह था कि वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा, यही कारण है कि यीशु को हम उद्धार-कर्त्ता के नाम से भी जानते हैं।

यीशु के जन्म से पूर्व उन्हीं दिनों औगूस्तुस कैसर की ओर से यह आज्ञा निकली कि उसके राज्य में सारे लोग अपना नाम लिखवाने के लिये अपने-अपने नगर को जाएं। सो अन्य लोगों की तरह मरियम और यूसुफ भी अपने नगर बैतलहम को गए। उन्हीं दिनों यीशु के जन्म लेने का समय पूरा हुआ और यूसुफ तथा मरियम एक सराय में गए कि वे वहां ठहर जाएं, परन्तु सराय में उन्हें ठहरने की जगह न मिली। सो वे एक भेड़शाला में गए और वहीं पर यीशु का जन्म हुआ। (लूका २:१-७)। कितनी अद्भुत बात है, कि परमेश्वर के पुत्र का जन्म एक ऐसे स्थान पर हुआ जहां कोई भी मनुष्य रहना नहीं चाहेगा। कदाचित परमेश्वर इस प्रकार यह प्रगट करना चाहता था कि उसका पुत्र जगत में प्रत्येक मनुष्य के लिये आया है।

उसी रात उस देश में एक बड़ी ही अजीब घटना घटी। कुछ गड़रिये एक मैदान में अपने झुंड का पहरा दे रहे थे। भेड़-बकरियां चर रही थीं और गड़रिए आपस में बातचीत कर रहे थे। तभी एकाएक एक स्वर्गदूत उनके पास आ खड़ा हुआ और मैदान में चारों ओर प्रकाश फैल गया। भय के मारे गड़रिए कांप उठे। परन्तु स्वर्ग-दूत ने उन से कहा, "डरो मत क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है। और इस का तुम्हारे लिये यह पता है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा हुआ पाओगे।" उसी समय एकाएक उन गड़रियों को स्वर्गदूतों का एक दल परमेश्वर की

स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, "कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिन से वह प्रसन्न है शान्ति हो।" (लूका २:८-१४)। जब स्वर्गदूत उनके पास से चले गए तो उन गड़रियों ने बैतलहम को जाकर बालक यीशु को वैसे ही चरनी में पड़ा हुआ पाया जैसे स्वर्गदूतों ने उन्हें बताया था।

किन्तु, यीशु के जन्म से सम्बन्धित फिर एक और अद्भुत घटना के विषय में बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं, कि यीशु के जन्म के समय पूरब में कुछ ज्योतिषियों को एक बड़ा ही अद्भुत तारा दिखाई दिया। सो वे बुद्धिमान ज्योंतिषी उस अद्भुत तारे का पीछा करते हुए यरुशलेम में पहुंचे। यरुशलेम में उस समय हेरोदेस नाम का राजा राज्य करता था। सो जब वे ज्योतिषी यरुशलेम में पहुंचकर लोगों से पूछने लगे कि उस देश में जिस राजा का जन्म हुआ है वह कहां है, क्योंकि हमने उसका तारा देखा है और वह हमें यहां तक लाया है। तो यह समाचार सुनकर वहां का राजा और लोग घबरा गए। क्योंकि उन्होंने सोचा कि अब एक नया राजा उनके देश को हड़प लेगा। सो हेरोदेस ने उन ज्योतिषियों को बुलाकर उनसे कहा कि तुम जाकर उस बालक का पता लगाओ और जब वह तुम्हें मिल जाए तो आकर मुझे भी सूचना देना ताकि मैं भी जाकर उस को प्रणाम करुं। परन्तु वास्तव में हेरोदेस की मनसा यह थी कि उस बालक का पता लगाकर वह उसे मरवा डालेगा। सो जब उन ज्योतिषियों ने उस बालक का पता लगा लिया और जब वे उसे प्रणाम करके और भेंट चढ़ाकर वापस लौट रहे थे तो परमेश्वर की ओर से उन्हें यह चितौनी मिली कि हेरोदेस के पास फिर न जाना। इसलिये वे दूसरे मार्ग से होकर अपने अपने देश को वापस चले गए। उन के चले जाने के बाद रात को प्रभु के एक दूत ने यूसुफ पर प्रगट होकर उस से कहा कि तू इस बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा क्योंकि हेरोदेस उसे

मरवा डालना चाहता है। ऐसी चेतावनी पाकर यूसुफ़ उसी समय उठा और यीशु तथा मरियम को लेकर मिस्र को चला गया। (मत्ती २:१-१४)।

मित्रो, ये सब बातें जो अभी हमने यीशु के सम्बन्ध में देखीं, इन सब के बारे में हम परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में पढ़ते हैं। इन सब बातों से हम यह सीखते हैं, कि आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व यीशु नाम के जिस बालक का जन्म बैतलहम में हुआ था वह कोई मनुष्य मात्र ही नहीं था परन्तु वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र था। यीशु के जन्म से सम्बन्धित ये सभी अद्भुत तथा महत्वपूर्ण घटनाएं, इस बात को प्रमाणित करती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यीशु ने पृथ्वी पर इसलिये जन्म लिया था ताकि उसके द्वारा जगत उद्धार पाए। क्योंकि परमेश्वर संसार में सभी मनुष्यों से प्रेम करता है और जगत में सबका उद्धार करना चाहता है। इसलिये उसने अपने सामर्थी वचन को यीशु के रुप में जगत में भेज दिया। न केवल यीशु का जन्म परन्तु उसका जीवन, मृत्यु और पुनःरुत्थान भी इस सच्चाई को प्रगट करते हैं कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिये यीशु ने परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर अपने आप को बलिदान कर दिया। बाइबल में लिखा है कि यीशु जगत के पापों का प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना २:२)। परन्तु यीशु की मृत्यु के द्वारा उद्धार पाने के लिये, बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य को यीशु में विश्वास लाना चाहिए, और पाप से अपना मन फिराना चाहिए, और अपने पापों की क्षमा के लिये पानी में बपतिस्मा लेना चाहिए। जब मनुष्य प्रभु यीशु में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानता है, तो यीशु उस

मनुष्य का उद्धार करता है। प्रभु यीशु के द्वारा आज हम सब अपने पापों से उद्धार पाकर परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं। सो परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हम सब से ऐसा प्रेम रखा, कि उस ने हमारे उद्धार के लिये अपने पुत्र यीशु को बलिदान कर दिया।

परन्तु क्या आपने परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अपने पापों से उद्धार पा लिया है ? क्या आप परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने को तैयार हैं ? जब आप अपनी मृत्यु के द्वारा अपनी देह से अलग होकर अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे तो आप कहां जाएंगे ? अनन्तकाल में केवल दो ही स्थान हैं, स्वर्ग और नरक। क्या आप परमेश्वर की इच्छा को मानकर उसके स्वर्ग में प्रवेश करना न चाहेंगे।

२

यीशु का अद्भुत जीवन

(१)

मित्रो :

अपने पिछले पाठ में हमने प्रभु यीशु के जन्म के सम्बन्ध में कुछ बड़ी ही अद्भुत बातों को देखा था। परन्तु आज हम संक्षिप्त में यीशु के जीवन से सम्बन्धित कुछ आवश्यक बातों को देखने जा रहे हैं। आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व जब बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ था तो उस समय यरुशलेम में हेरोदेस ने यीशु मसीह के जन्म के बारे में सुना, और जब उसे यह बताया गया कि मसीह के जन्म के विषय में सैकड़ों वर्षों से ये भविष्यद्वाणियां होती आ रही हैं कि उसका जन्म बैतलहम में होगा और वह बड़ा होकर राज्य करेगा। (यशायाह ७: १४; ९:६,७; मीका ५:२)। तो हेरोदेस बड़ा ही चिन्तित हुआ क्योंकि उसे ऐसा लगा जैसे कि उसका राज्य उसके हाथ से निकल रहा है। क्योंकि उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि मसीह का राज्य इस जगत का नहीं परन्तु आत्मिक होगा; और वह लोगों के हाथों से बनाई हुई राज्य-गद्दियों पर नहीं पर उनके मनों पर राज्य करेगा। सो हेरोदेस ने यीशु को मरवाने का प्रत्येक प्रयत्न किया, और उसने यहां तक भी किया कि अपने राज्य में सब छोटे-छोटे बालकों को मरवा दिया। परन्तु हेरोदेस परमेश्वर के पुत्र को मरवाने में असफल रहा। क्योंकि परमेश्वर ने यूसुफ़ को अपने एक दूत के द्वारा हेरोदेस की बुरी मनसा के विषय में पहिले ही बता दिया था, और उसको

आज्ञा दी कि मरियम और यीशु को मिस्र में लेकर चला जा। सो इस प्रकार यीशु का बचपन लगभग मिस्र देश में ही बीता। जब हेरोदेस की मृत्यु हो गई तो युसुफ़ मरियम और यीशु को लेकर यरुशलेम में वापस आ गया और वे लोग नासरत नाम के नगर में रहने लगे। इसी कारण यीशु को यीशु नासरी भी कहा जाता है। क्योंकि वह नासरत में रहता था।

इस अवधि से लेकर जब तक यीशु तीस वर्ष की आयु का न हुआ, तब तक केवल एक घटना को छोड़ और कोई विशेष बात हमें बाइबल में यीशु के सम्बन्ध में नहीं मिलती। जब वह केवल बारह वर्ष का था तो उस समय की एक रोचक घटना के सम्बन्ध में हम बाइबल में यूं पढ़ते हैं, कि एक बार जब वह अपनी माता मरियम तथा अन्य लोगों के साथ यरुशलेम से नासरत को लौट रहा था। तो बाकी सब लोग तो अपने नगर में पहुंच गए, परन्तु यीशु उनके साथ नहीं पहुंचा। जब वह नगर में कहीं नहीं मिला तो वे लोग उसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यरुशलेम में पहुंचे। और वहां वे ये देखकर दंग रह गए कि वह बारह साल का लड़का यहूदियों के मन्दिर में बैठा हुआ उनके उपदेशकों से वार्तालाप कर रहा था और उनसे प्रश्न पूछ रहा था। और बाइबल का लेखक हमें बताता है, कि सुननेवाले सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित थे। और जब उसकी माता ने उससे पूछा कि उसनें ऐसा क्यों किया, क्योंकि हम तुझे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते परेशान हो गए हैं, तो यीशु ने उत्तर देकर कहा, कि तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे ? क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के कामों में लगे रहना अवश्यक है। (लूका २:४१—४९)।

इस घटना के बाद, जब तक यीशु तीस वर्ष की आयु का न हुआ, उसके विषय में हमें बाइबल में कुछ विशेष नहीं मिलता। हां, इतना अवश्य लिखा हुआ है, कि वह बढ़ई का काम किया करता था। क्योंकि

मरकुस ६ अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि एक बार जब वह यहूदियों के आराधनालय में लोगों को उपदेश दे रहा था, तो सुनने वाले लोग बड़े ही चकित हुए, और आपस में कहने लगे, कि, "इसको ये बातें कहां से आ गईं ? और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है ? और कैसे सामर्थ के काम इसके हाथों से प्रगट होते हैं ? क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र और याकूब और योसेस और यहूदा और शमौन का भाई है ? और क्या उसकी बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं रहतीं ? इसलिये उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई।" सो यहां से हम, सीखते हैं, कि उपदेश देने और सामर्थपूर्ण काम करने से पहिले, यीशु बढ़ई का काम किया करता था। अकसर कई बार लोग यह सवाल उठाते हैं, कि यीशु के बारे में बारह से लेकर तीस वर्ष तक की आयु के बारे में बाइबल क्यों नहीं कुछ बताती ? और कभी-कभी तो यह भी सुनने में आता हैं, कि कुछ लोगों का विचार है। कि इस अवधि में यीशु नासरत से काशमीर में आकर रहा और बाकी समय सब वहीं व्यतीत किया परन्तु यह लोगों का मन-घड़न्त विचार है सच्चाई यह है, कि यीशु इस अवधि में नासरत में था और वह बढ़ई का काम किया करता था, जैसा कि अभी हमने पवित्र बाइबल में से पढ़ा। इस सम्बन्ध में एक बड़ी ही विशेष बात हमें यह याद रखनी चाहिए, कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, अर्थात् इस पुस्तक में जिन बातों को लिखा गया है, वे सब बातें परमेश्वर की प्रेरणा से बाइबल में लिखी गई हैं। और परमेश्वर ने इस पुस्तक में जो कुछ भी लिखवाया है वह केवल इतना ही लिखवाया है जिसे जानने की आवश्यकता हम सबको है। जैसे कि हम देखते हैं कि बाइबल में सबसे पहिले उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर द्वारा सारी सृष्टि की रचना के सम्बन्ध में हम पढ़ते हैं। परन्तु विचार-पूर्ण बात यह है, कि सम्पूर्ण सृष्टि की रचना का वर्णन यहां केवल ३१ पदों में और केवल दो पृष्ठों पर ही किया गया है ! परन्तु मान लीजिए, कि

कोई मनुष्य इसी वर्णन को अपनी इच्छा से लिखता, तो क्या होता ? वह इसी वृत्तान्त की एक पूरी पुस्तक बना देता। वह एक-एक बात को बढ़ा-चढ़ाकर उसे सुन्दर और आकर्षक और आश्चर्यपूर्ण बनाकर उसका वर्णन करता। परन्तु उसी बात को परमेश्वर ने कुल दो छोटे-छोटे पन्नों पर लिखवाकर हमें दे दिया, क्योंकि उसने केवल हमें इतना ही बताया जितना हमें जानने की आवश्यकता है। इसी प्रकार, प्रभु यीशु के सम्बन्ध में बहुत सी बातों के बारे में हमें बाइबल में नहीं मिलता। यीशु के सामर्थपूर्ण कामों का वर्णन करके, बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं, गए परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २०:३०,३१)। सो यीशु के सम्बन्ध में जो कुछ भी परमेश्वर ने हमें बाइबल में बताया है, वह केवल उतना ही बताया है जो हमें उसमें यह विश्वास दिलाने को पर्याप्त है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। जिन बातों का सम्बन्ध हमारी आत्मा के उद्धार से है, और जो बातें हमें जानना आवश्यक हैं केवल उन्हीं बातों को हमें परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में हमारे लिये लिखवाया है।

यीशु के जन्म से सम्बन्धित अद्भुत घटनाओं को परमेश्वर ने इसलिये बाइबल में लिखवाया है, ताकि हम उन्हें पढ़कर जानें कि उसका जन्म मनुष्य की इच्छा से नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से हुआ था। इसी प्रकार उसके आश्चर्यपूर्ण तथा सामर्थपूर्ण कामों को बाइबल में इसलिये लिखा गया है ताकि हमें यह विश्वास हो कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का एकलौता पुत्र है। उसकी मृत्यु के वर्णन को बाइबल में से पढ़कर हमें परमेश्वर के प्रेम का ज्ञान होता है, अर्थात् उसके द्वारा हम जानते हैं कि परमेश्वर सचमुच में हम से ऐसा महान प्रेम रखता है कि उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे पापों के कारण बलिदान कर दिया,

जिससे कि जगत के पापों का प्रायाश्चित हो जाए, और हम सब यीशु की मृत्यु के द्वारा उद्धार पाएं। (यूहन्ना ४:१०)। वास्तव में यीशु के जीवन से भी अधिक बाइबल हमें यीशु की मृत्यु के विषय में बताती है, क्योंकि हकीकत में यीशु के जीवन से नहीं परन्तु उसकी मृत्यु के द्वारा हमारा उद्धार होता है। यदि यीशु हमारे पापों के बदले में क्रूस पर न मरता तो उसके जीवन से हमें कोई लाभ न होता।

किन्तु जहां यीशु की मृत्यु आवश्यक थी वहां उसका पुनरुत्थान भी आवश्यक था। क्योंकि यदि उसका पुनरुत्थान न होता तो वह मात्र एक मरा हुआ इन्सान और एक झूठा भविष्यद्वक्ता ठहरता। क्योंकि सदियों से इस पृथ्वी पर अनेकों लोग आए जिन्होंने अपने विषय में उद्धारकर्त्ता और अवतार इत्यादि होने के दावे किए, परन्तु वे सभी अन्य मनुष्यों की तरह मिट्टी में मिल गए। पर यीशु का यह दावा था कि वह तीसरे दिन अपनी मौत के बाद फिर जी उठेगा। और बाइबल हमें बड़े-बड़े अक्षरों में बड़ी ही स्पष्टता के साथ बताती है कि यीशु अपने कहे अनुसार मौत के बाद तीसरे दिन फिर जी उठा। इसलिये आज हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं, कि हमारा उद्धारकर्त्ता कोई मनुष्य नहीं परन्तु परमेश्वर का पुत्र है ; कोई मरा हुआ इन्सान नहीं परन्तु जीवता प्रभु है। और उसी यीशु ने, जो आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व परमेश्वर की सामर्थ से बैतलहम में पैदा हुआ था और जो क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ था और जो कब्र में गाड़ा गया था और फिर जी उठा था, स्वर्ग में वापस जाने से पहिले सब मनुष्यों के लिये यह आज्ञा दी थी कि उसमें "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१६)। निश्चय ही, हमारा उद्धार क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा होता है, परन्तु यीशु ने आज्ञा दी है कि अपने पापों से

उद्धार पाने के लिये हम उसमें विश्वास लाएं और बपतिस्मा लें अर्थात जल-रूपी-कब्र के भीतर दफ़न होकर उसमें से बाहर आएं।

सो हम देखते हैं कि परमेश्वर यीशु के द्वारा मनुष्य का उद्धार करने को तैयार है। परन्तु क्या आप उसके उद्धार को प्राप्त करने को तैयार हैं? प्रभु अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपको ताकत दे।

यीशु का अद्भुत जीवन

मित्रो : (२)

हमारे पिछले दो पाठ विशेष रूप से प्रभु यीशु मसीह के जीवन पर आधारित थे। यीशु के आरम्भिक जीवन के सम्बन्ध में बाइबल हमें यद्यपि बहुतायत से कुछ अधिक नहीं बताती। परन्तु जब उसकी आयु लगभग तीस वर्ष की हुई, और जब परमेश्वर की दृष्टि में वह समय निकट आ गया कि जिस उद्देश्य के लिये उसने पृथ्वी पर जन्म लिया था उसकी पूर्ती हो, तो यीशु ने उपदेश देना और सामर्थपूर्ण कामों को करना आरम्भ कर दिया। इस अवधि में, अर्थात तीस वर्ष की आयु से लेकर तेंतीस वर्ष की आयु तक, यानी यीशु के क्रूसारोहण के समय तक, उसने इतने अधिक सामर्थपूर्ण काम किए कि बाइबल का लेखक एक स्थान पर लिखकर इस प्रकार कहता है, "और बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।" (यूहन्ना २१:२५)।

किन्तु उपदेश देने और ये सब काम करने से पहिले यीशु ने एक बड़ा ही आवश्यक काम यह किया कि उसने यूहन्ना के हाथ से बपतिस्मा लिया। यूहन्ना का जन्म यीशु के जन्म से कुछ ही समय पहिले हुआ था और बाइबल हमें बताती है कि यूहन्ना को परमेश्वर ने एक बड़े ही विशेष कार्य के लिये चुना था। वह लोगों के बीच में मन फिराव का प्रचार किया करता था और उन्हें मन फिराव का बपतिस्मा दिया करता था। यूहन्ना प्रभु यीशु के लिये मार्ग तैयार

करने को परमेश्वर की ओर से आया था, अर्थात् वह लोगों को तैयार करता था कि वे प्रभु यीशु को स्वीकार करने के लिये तैयार हो जाएं। जिस समय प्रभु यीशु ने उपदेश देना आरम्भ किया, उस से कुछ ही समय पूर्व, बाइबल में लिखा है कि, "परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। और वह यरदन के आस-पास के सारे देश में आकर, पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करने लगा। जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है, कि जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी बनाओ। हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊंचा-नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा। और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा।" (लूका ३:२—६)। बाइबल का लेखक हमें बताता है, कि यूहन्ना के प्रचार को सुनकर लोगों की भीड़ की भीड़ उसके पास मन फिराव का बपतिस्मा लेने को आने लगी और वह उन सब को यरदन नदी में बपतिस्मा देता था। (मत्ती ३:५, ६)। परन्तु यूहन्ना को यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि यीशु स्वयं भी उससे बपतिस्मा लेने को उसके पास आया। क्योंकि यूहन्ना जानता था कि बपतिस्मा लेने की आवश्यकता पापियों को है, ताकि वे पाप से अपना मन फिराकर अपने वर्तमान जीवन को बपतिस्मे के पानी के भीतर गाड़ दें और उसमें से बाहर आकर एक नए जीवन का आरम्भ करें। परन्तु यहां यूहन्ना को बड़ा ही विचित्र लगा कि प्रभु स्वयं भी उससे बपतिस्मा लेने को उसके पास आया है। सो पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?" तब लिखा है, कि, "यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से

सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उसने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।" (मत्ती ३:१३—१६)।

यहां से हम सीखते हैं, कि यद्यपि यीशु को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह निष्पाप परमेश्वर का पुत्र था। किन्तु तौभी उसने यह कहकर बपतिस्मा लिया, कि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। अर्थात जब मनुष्य बपतिस्मा लेता है, तो वह परमेश्वर की धार्मिकता को पूरा करता है। और फिर हम यह भी देखते हैं, कि यीशु बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया। यानी वह बपतिस्मा लेने के द्वारा पानी के भीतर गाड़ा गया और फिर उसमें से बाहर आया। सो स्पष्ट ही है, कि बपतिस्मा लेने का अर्थ यह नहीं है कि पानी की कुछ बूंदे मनुष्य के ऊपर छिड़क दी जाएं। परन्तु बपतिस्मा लेने का अर्थ है पानी के भीतर गाड़े जाना और उसमें से बाहर आना। जब प्रभु यीशु का क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ और वह मरने के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठा, तो उसने स्वर्ग में वापस जाने से पहिले, अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा था, कि, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५, १६)। अर्थात् उद्धार प्राप्त करने के लिये, यीशु ने कहा, मनुष्य को उसमें विश्वास लाना और बपतिस्मा लेना चाहिए। और उसने उनसे यह भी कहा कि जब तुम विश्वासियों को बपतिस्मा दोगे तो उन्हें पिता अर्थात् परमेश्वर और

पुत्र अर्थात् यीशु और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देना। (मत्ती २८ : १९)। परन्तु जिस बपतिस्मे की आज्ञा यीशु ने दी उसका उद्देश्य यूहन्ना के बपतिस्मे के उद्देश्य से भिन्न है। क्योंकि यूहन्ना लोगों को मन फिराव का बपतिस्मा देता था, जबकि प्रभु यीशु ने जिस बपतिस्मे की आज्ञा दी है वह उद्धार पाने के लिये या पापों की क्षमा के लिये लिया जाता है। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)।

किन्तु प्रभु यीशु के जीवन से हम यह सीखते हैं कि जबकि उसने निष्पाप और धर्मी होने पर भी यह कहकर बपतिस्मा लिया कि हमें इसी रीति से परमेश्वर की धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तो हम जो पापी और अधर्मी हैं किस प्रकार उसकी आज्ञा को तुच्छ मानकर उद्धार प्राप्त कर सकते हैं ? (लूका ७ : २९, ३०)। किन्तु फिर हम प्रभु यीशु के सम्बन्ध में बाइबल में पढ़ते हैं, कि जब उसने बपतिस्मा ले लिया तो, "आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इबलीस से उसकी परीक्षा हो। वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा अन्त में उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने पास आकर उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। उसने उत्तर दिया; कि लिखा है, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा। तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। और उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आपको नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे। यीशु ने उस से कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे

पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर, उससे कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा। तब यीशु ने उससे कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर। तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।" (मत्ती ४:१—११)। यीशु के जीवन में घटी इस घटना से हम सीखते हैं, कि न तो किसी भी परिस्थिति में हमें परमेश्वर की परीक्षा करनी चाहिए। और सच्चे तथा जीवते परमेश्वर को छोड़ हमें किसी भी अन्य वस्तु या मनुष्य की उपासना नहीं करनी चाहिए।

सो इन दो प्रमुख घटनाओं के बाद, अर्थात बपतिस्मा लेने और शैतान द्वारा उसकी परख किए जाने के बाद, यीशु ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना और उपदेश देना और सामर्थपूर्ण कामों को करना आरम्भ किया। बाइबल हमें बताती है, कि, "यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी-वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया। और गलील और दिकापुलिस और यरुशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।" (मत्ती ४ : २३—२५)।

परन्तु लगभग इन तीन वर्षों में यीशु ने जो कुछ भी किया, उस सबका एक यही उद्देश्य था कि लोग प्रगट में और वास्तव में यह जान

लें कि वह परमेश्वर की ओर से आया है। वह कोई मात्र मनुष्य नहीं परन्तु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का उद्धार इसी एक बात पर निर्भर करता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि यदि रोमी क्रूस के ऊपर मरनेवाला वह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र मसीह नहीं था तो हमारा उद्धार कदापि नहीं हो सकता। क्योंकि जिस प्रकार एक अन्धा अन्धे को मार्ग नहीं बता सकता, उसी प्रकार एक पापी मनुष्य के बलिदान से जगत के पापियों का उद्धार नहीं हो सकता। इसलिये जगत के उद्धार के लिये आवश्यक था कि एक ऐसे मनुष्य का बलिदान हो जो बे-ऐब और निष्पाप हो। परन्तु जगत में ऐसा कौन सा मनुष्य है जिसने कभी कोई पाप न किया हो? इसलिये परमेश्वर ने अपने वचन को अपनी सामर्थ से मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेजा। वही यीशु मसीह था; वही परमेश्वर का पुत्र था। उसने जगत में एक मनुष्य के स्वरूप में होकर सिद्ध और निष्पाप जीवन बिताया, और फिर वह परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ। किन्तु यदि क्रूस पर चढ़ाया गया वह यीशु हकीकत में परमेश्वर का पुत्र न होता तो वह ये सब सामर्थ के काम किस प्रकार कर पाता जिनके विषय में अभी हमने पवित्र बाइबल में से पढ़ा? जन्म के अन्धे, जन्म के लंगड़े, और कोढ़ी उसके कहने से चंगे हो जाते थे। वह मुट्ठी-भर भोजन अपने हाथ में लेता था और उससे हजारों लोगों को खिलाकर तृप्त कर देता था। वह बोलता था और मुर्दे जी उठते थे। परन्तु इन सब बातों से भी बढ़कर, यदि वह परमेश्वर का पुत्र न होता, तो वह अपनी मौत के बाद फिर से कैसे जी उठता?

मित्रो, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमारा उद्धार करने के लिये उसने अपने पुत्र को बलिदान कर दिया, अर्थात् उसे हमारे पापों का प्रायश्चित बना दिया। और कितनी अद्भुत बात है यह कि

नाम उन सबमें बड़ा है। मूसा का जन्म इस्राएलियों के बीच उस समय हुआ था जब इस्राएल जाती कई वर्षों से मिस्र देश में बन्धुआई में थी। जब इस्राएलियों ने परमेश्वर के साथ चलना छोड़ दिया था, तो परमेश्वर ने उन्हें दण्ड देने के लिए उन्हें मिस्रियों के हाथ में कर दिया था। परन्तु जब उन्होंने अपने छुटकारे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने उनके बीच मूसा को उनका छुड़ानेवाला बनाकर भेजा। जब मूसा इस्राएलियों को दासत्व में से निकालकर ले आया, तो उसने उनसे कहा, कि परमेश्वर भविष्य में तुम्हारे बीच में से मेरे समान एक और नबी को उत्पन्न करेगा और उसने उनसे कहा कि तुम सब उसकी सुनना। मूसा को परमेश्वर ने इस्राएलियों के बीच उन्हें बन्धुवाई से छुड़ाने को भेजा था। परन्तु उसने कहा, कि परमेश्वर मेरे समान एक और छुड़ानेवाले को भेजेगा। पाप का दासत्व मिस्र के दासत्व से भी बड़ा है। और उससे छुटकारा दिलवाने वाला जगत में आनेवाला था। सो हम देखते हैं कि पुराने नियम में बार-बार इस एक ही बात की ओर ध्यान दिलाया गया है, कि यीशु मसीह, पाप से छुटकारा दिलवानेवाला जगत में आ रहा है। इसी प्रकार, पुराने नियम के काल में उस चुनी हुई जाति के बीच परमेश्वर ने अनेक भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। उन भविष्यद्वक्ताओं ने बार-बार मसीह के आने की घोषणा की थी। और यहाँ तक, कि उनकी पुस्तकों में हम आज भी पढ़ सकते हैं, कि उन्होंने मसीह के जन्म, उसके जन्म स्थान, उसकी मृत्यु और जी उठने की बिलकुल ठीक भविष्यद्वाणियां की थीं। सो इस प्रकार सम्पूर्ण पुराने नियम का मुख्य उपदेश यही है, कि मसीह आ रहा है।

परन्तु, फिर हम बाइबल के दूसरे भाग, अर्थात नए नियम को पढ़ते हैं। और उसमें हम यह मुख्य बात देखते हैं, कि मसीह आ गया है। बिलकुल ठीक उसी प्रकार जैसे कि पुराने नियम में परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने बताया था। वह परमेश्वर की सामर्थ से उत्पन्न हुआ। (यशायाह ७ : १४; मत्ती १ : १८—२५)। अपने महान् तथा

में आनेवाला है। पुराने नियम में हम पढ़ते हैं कि आदि में जब परमेश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की थी तो परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया था। आदम और हव्वा ससार में सबसे पहिले पुरुष और स्त्री थे। वे आरम्भ में परमेश्वर के साथ उसकी संगति में रहते थे। परन्तु दुष्टात्मा अर्थात् शैतान के कहने में आकर उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। और इस कारण वे पापी बन गए और परमेश्वर की संगति से दूर हो गए। अर्थात वे परमात्मा से अलग होकर आत्मिक रूप से मर गए। परन्तु परमेश्वर मनुष्य को फिर से पवित्र बनाकर अपने पास वापस लाना चाहता था, और अनन्त जीवन के जिस अधिकार को मनुष्य ने पाप करके खो दिया था वह उसे वापस देना चाहता था। सो उस समय परमेश्वर ने मनुष्य को यह आश्वासन दिया था और शैतान को यह श्राप दिया था, कि जिस स्त्री को शैतान ने सबसे पहिले पाप करने को प्रोत्साहित किया था, उसी के वंश से जगत में एक बालक का जन्म होगा। और वह बालक शैतान के सिर को कुचल डालेगा। (उत्पत्ति ३ : १५)।

इस घटना के कई सौ वर्ष पश्चात् परमेश्वर ने अपनी इच्छा को इब्राहीम नाम के एक धर्मी मनुष्य पर प्रगट करके उससे कहा था, कि उसके द्वारा वह एक बहुत बड़ी जाति बनाएगा और पृथ्वी के सारे लोग उसके द्वारा आशीष पाएंगे। सो पुराने नियम में हम इस्राएल नाम की जाति के बारे में पढ़ते हैं। इस जाति के बीच परमेश्वर ने बड़े बड़े काम किए। उसने उनकी अगुवाई के लिए मूसा और यहोशु जैसे योग्य अगुवे दिए। और उन पर राज्य करने के लिये दाऊद और सुलेमान जैसे बुद्धिमान राजा नियुक्त किए। इस्राएल नाम की इसी जाति को परमेश्वर ने अपनी प्रथम लिखी व्यवस्था दी थी। इसीलिए इस व्यवस्था को आज हम पुराना नियम कहते हैं। क्योंकि इस व्यवस्था में लिखे नियम तथा आज्ञाएं केवल इस्राएलियों को ही दिए गए थे। पुराने नियम के काल में यों तो अनेक प्रमुख लोग हुए, परन्तु मूसा का

१२

यीशु आया, और फिर आ रहा है !

मित्रो :

आईए अब इस थोड़े से समय में हम परमेश्वर के वचन अर्थात् पवित्र बाइबल में लिखी बातों के ऊपर विचार करें। बाइबल संसार की सबसे महान् पुस्तक है। क्योंकि इस पुस्तक में लिखी बातें परमेश्वर का वचन है। बाइबल की छियासठ पुस्तकों को लगभग चालीस लेखकों ने करीब सोलह सौ वर्षों के भीतर अलग-अलग जगहों पर लिखा था। इस पुस्तक में लिखी बातें परमेश्वर का वचन इसलिए हैं क्योंकि जो कुछ भी बातें इस पुस्तक में लिखी हुई हैं वे सब परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई थीं। जगह-जगह इस पुस्तक में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने कहा या परमेश्वर यों कहता है। एक जगह बाइबल में लिखा हुआ है, कि इस पुस्तक में कुछ भी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं लिखा गया पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (२ पतरस १ : २१)। और एक अन्य स्थान पर लिखा है, कि हर एक वचन इस पुस्तक में परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। (२ तीमुथियुस ३ : १६)। किन्तु सम्पूर्ण बाइबल का केवल एक ही मुख्य विषय है, अर्थात् यीशु मसीह। बाइबल की पुस्तकों को दो भागों में बाँटा गया है। पहिले भाग की उन्तालिस पुस्तकों को पुराना नियम कहते हैं, क्योंकि ये सभी पुस्तकें यीशु मसीह के जगत में आने से पहिले लिखी गई थीं। इसी प्रकार, दूसरे भाग की सत्ताईस पुस्तकों को नया नियम कहते हैं, क्योंकि ये सभी पुस्तकें यीशु मसीह के जगत में आने के बाद लिखी गई थीं।

बाइबल के पुराने नियम का मूल विषय यह है, कि मसीह जगत

बरछे से उसका पंजर भेदा। क्या इतने सब प्रमाणों के बाद भी कोई कह सकता है, कि यीशु क्रूस पर वास्तव में मरा नहीं था ? परन्तु यदि हम यह बात मान भी लें, तो तीसरे दिन जब उस भूखे-प्यासे और जख़्मी इन्सान को होश आया, तो क्या वह कब्र पर रखे उस भारी पत्थर को बाहर की ओर धकेलकर हटा सकता था ? और यदि वह यह भी कर लेता, तो क्या वह मारा-कूटा हुआ मनुष्य उन शक्तिशाली सिपाहियों की आंखों से बचकर निकल सकता था जो उसकी कब्र पर पहरा दे रहे थे ?? यह बिल्कुल असम्भव था।

सो जबकि यह सब कुछ असम्भव था, किन्तु फिर भी यीशु की कब्र तीसरे दिन खाली पाई गई। तो क्या हमें यह स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए, कि यीशु सचमुच में परमेश्वर की सामर्थ से जी उठा। मित्रो, यह सच है कि मनुष्य के दृष्टिकोण से यह बात बड़ी ही अनहोनी लगती है। और यहां तक कि स्वयं यीशु के एक चेले ने भी यह मानने से इन्कार कर दिया था कि यीशु जी उठा है। परन्तु जब यीशु उसके पास आया और उससे बातें की और उसको यह निमंत्रण दिया, कि अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो। तो यह सुन उसने यीशु को यह कहकर स्वीकार किया, कि हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर (यूहन्ना २० : २६—२८)। और मित्रो, आज वैसा ही अवसर हम सब के पास भी है। कि हम सब यीशु को अपना प्रभु स्वीकार करें। और उसकी आज्ञानुसार अपने-अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा लें।

बाइबल में लिखा है, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। (१ कुरिन्थियों १५ : ३, ४)। और एक दिन जगत का न्याय करने के लिये वह फिर से आनेवाला है। (प्रेरितों १७ : ३०, ३१)।

और वे सब यीशु की मृत्यु के कारण इतने अधिक डरे हुए थे, कि उन्हें डर था कि कहीं उन्हें भी पकड़कर सज़ा न दी जाए। परन्तु यदि वे हिम्मत करके कब्र के पास जाते भी तो क्या वे उन सिपाहियों का सामना करने के योग्य थे जो यीशु की कब्र पर सशस्त्र पहरा दे रहे थे ? क्या वे उन रोमी सिपाहियों की आंखों में धूल झोंककर, कब्र पर लगी मुहर को तोड़कर और कब्र पर धरे भारी पत्थर को हटाकर, कब्र में से यीशु की लोथ को निकाल कर ले जा सकते थे ? यह असम्भव था, क्योंकि कब्र पर सिपाही एक बहुत भारी संख्या में मौजूद थे। वे ऐसा नहीं कर सकते थे।

यदि मनुष्यों में यह काम कोई कर सकता था तो इस काम को करने के योग्य केवल वे रोमी सिपाही ही थे जो कब्र का पहरा दे रहे थे। परन्तु वे यह काम क्यों करते ? उन्हें तो कब्र पर पहरा देने को रखा गया था। उनको सरकार की ओर से यह आज्ञा मिली थी कि वे उस कब्र की रखवाली करें। और वे जानते थे कि यदि तीन दिन में उस कब्र का मुंह खुल गया तो न केवल उनकी नौकरी परन्तु उनकी जान को भी ख़तरा था।

लेकिन इतिहास कहता है, कि तीसरे दिन का आरम्भ होते ही यीशु की कब्र खाली पाई गई। यहूदि उसकी देह को कब्र में से नहीं निकालना चाहते थे। यीशु के चेले यह काम नहीं कर सकते थे। और रोमी सिपाहियों को ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। तब क्या यीशु को बेहोशी की हालत में कब्र में रखा गया था, और होश आने पर वह स्वयं बाहर निकल आया ? परन्तु इस सम्बन्ध में हम देखते हैं, कि जिन लोगों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था स्वयं उन्होंने ही इस बात को स्वीकार किया था वह मर चुका है। (यूहन्ना १९ : ३३)। और इसके बाद, लिखा है, कि सिपाहियों में से एक ने

पहिली बात पर जब हम विचार करते हैं, तो जहां तक यीशु की देह को कब्र में से निकाल ले जाने की बात है, यह काम केवल तीन ही लोग कर सकते थे। यानि या तो यहूदी उसकी देह को निकाल सकते थे, या उसके चेले, या फिर वे सिपाही जो यीशु की कब्र पर पहरा दे रहे थे। परन्तु यहूदी उसकी देह को कब्र में से क्यों निकालते ? यीशु की मृत्यु यहूदियों के ही कारण हुई थी। वे यीशु के शत्रु थे और उसकी देह को निकालने से उन्हें कोई लाभ न होता। और सच्चाई तो यह है कि जब यीशु की लोथ को कब्र के भीतर रख दिया गया था, तो यहूदियों के सरदारों ने ही पीलातुस अधिकारी के पास जाकर उस से बिनती की थी कि यीशु की कब्र पर पहरा रखा जाए। इस सम्बन्ध में हम उन्हीं के शब्दों को पढ़ते हैं, कि पीलातुस के पास आकर उन्हों ने उससे यों कहा था, "हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूँगा। सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है।" और हम पढ़ते हैं, कि पीलातुस ने उन्हें पहरेदारों को ले जाकर कब्र पर पहरा देने की आज्ञा दी। और उन्होंने जाकर कब्र को सील-बन्द कर दिया और पहरेदार उस कब्र की रखवाली करने लगे। सो हम देखते हैं, कि उसकी लोथ को बाहर निकालने के विपरीत यहूदी यीशु की देह को उस कब्र के भीतर रखना चाहते थे। और क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं यीशु के चेले आकर उसकी देह को कब्र में से निकाल ले जाएं, इसलिये उन्होंने कब्र की सुरक्षा के लिये उस पर मुहर लगा दी और पहरेदारों को बैठा दिया।

परन्तु क्या यीशु के चेले उसकी देह को कब्र में से निकाल सकते थे ? यीशु के बारह चेले थे, जिनमें से एक की मृत्यु हो चुकी थी,

से छुड़ाकर जिलाया, क्योंकि परमेश्वर का पुत्र होने के कारण यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता। (प्रेरितों २ : २४)। क्या परमेश्वर से कुछ भी असम्भव है ? दूसरे, जब परमेश्वर एक मरे हुए दाने को, जो भूमि में बोया जाता है, फिर से नया जीवन दे सकता हैं, तो क्या वह मनुष्य को फिर से जिन्दा नहीं कर सकता ? तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं, कि यीशु का पुनरुत्थान यीशु की मृत्यु के ही समान पहिले ही से परमेश्वर की योजना में था। बाइबल के पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों में न हम केवल यीशु की मृत्यु के ही सम्बन्ध में पढ़ते हैं, परन्तु वहां हम उसके पुनरुत्थान के सम्बन्ध में भी पढ़ते हैं। न केवल परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने यीशु की मृत्यु के ही बारे में बताया था। पर उन्होंने यह भी बताया था कि वह तीसरे दिन फिर से जी उठेगा। यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर जगत के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था। (१ यूहन्ना २ : २)। और उसके पुनरुत्थान के द्वारा वह यह प्रमाणित करना चाहता था कि उसी के समान एक दिन सब मनुष्य परमेश्वर की सामर्थ से जी उठेंगे। पवित्र बाइबल में लिखा है, "इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया हैं और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७ : ३०, ३१)।

परन्तु जो लोग यीशु के पुनरुत्थान पर संदेह करते हैं या उसके पुनरुत्थान को मानने से इन्कार करते हैं, उनके प्रायः दो मत हैं। अर्थात् एक तो यह कि यीशु की मृत्यु के बाद कुछ लोग उसकी देह को कब्र में से निकाल कर ले गए। और दूसरे यह, कि यीशु क्रूस पर वास्तव में मरा नहीं था परन्तु केवल बेहोश हो गया था। यहां

मृत्यु के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठेगा। एक जगह उसने अपने सुननेवालों से कहा, "कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।" (यूहन्ना १२ : २४)। इस प्रकार यीशु ने प्रगट किया कि एक दाने के समान वह भूमि में गाड़ा जाएगा और फिर उसमें से बाहर निकलकर वह बहुतों के लिए अनन्त जीवन का कारण बनेगा। एक अन्य स्थान पर, यीशु ने अपनी देह की तुलना एक मंदिर से करके इस प्रकार कहा, "कि इस मंदिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" (यूहन्ना २ : १९)। यद्यपि जो लोग उस समय उसकी बातें सुन रहे थे उस वक्त उसकी बात को समझ नहीं पाए। परन्तु जब वह अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठा, तो उन्हें स्मरण आया कि उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में वह बात कही थी। बाइबल हमें बताती है, कि जी उठने के बाद यीशु चालीस दिन तक पृथ्वी पर रहा। और इन चालीस दिनों में अनेक लोगों ने उसको देखा और उससे बातें कीं। अन्त में, अपने चेलों को यह आज्ञा देकर, वह स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया, "कि, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८:१८-२०)।

मित्रो, यूं तो यीशु के पुनरुत्थान की कथा को सच्चा ठहराने वाले प्रमाण अनेक हैं। किन्तु तौभी कुछ लोगों को इस बात पर संदेह होता है, कि मरने के बाद एक मनुष्य फिर से क्योंकर जीवित हो सकता है ? सबसे पहिली बात तो इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि बाइबल में लिखा है कि यीशु को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों

११

यीशु का जी उठना

मित्रो :

इस कार्यक्रम में हम यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनते हैं। यीशु मसीह का सुसमाचार उसकी मृत्यु है। क्योंकि वह परमेश्वर की योजना से और उसकी इच्छा से जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस के ऊपर मरा। परन्तु यदि मैं प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु का ही प्रचार करूं तो मैं अधूरा सुसमाचार सुनाता हूं। क्योंकि यीशु न केवल पापियों के लिए मरा परन्तु वह फिर से जी भी उठा। जो बाइबल हमें उसकी मृत्यु का सुसमाचार देती है, वही बाइबल हमें उसके जी उठने का सुसमाचार भी देती है। यदि यीशु अन्य लोगों की नाईं पृथ्वी पर केवल मर ही गया होता तो इसमें कोई श्रेष्ठ बात न होती। परन्तु क्योंकि वह मरने के बाद मुर्दों में से जी उठा, इसलिये वह मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ, और वास्तव में वही है जो उसने होने का दावा किया, अर्थात् परमेश्वर का एकलौता पुत्र।

जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने अनेक आश्चर्यक्रम किए। उसने साधारण वस्तुओं को महत्वपूर्ण वस्तुओं में बदल डाला। जो लोग ला-ईलाज थे उन्हें उसने चंगा कर दिया। यहाँ तक कि उसने मरे हुओं को फिर से जिला दिया। परन्तु सबसे बडा आश्चर्यक्रम जो यीशु ने किया, वह उसने स्वयं अपनी ही देह के ऊपर किया। जब वह प्रचार किया करता था तो उसने लोगों को बताया था कि वह अपनी

कितनी महान् बात है यह ! कितनी महान् आशा है यह ! कि उसकी मृत्यु के द्वारा न केवल हम सब पृथ्वी पर ही एक होते हैं, परन्तु हम स्वर्ग में भी उसके साथ हमेशा एक साथ रहेंगे । क्या आपने परमेश्वर की इच्छा को मान लिया है ? क्या आप उसकी इच्छा पर चल रहे हैं ?

और रंग और सांस्कृति के नाम पर लोगों को सताया और मारा जा रहा है। प्रभु यीशु मसीह की मौत के सुसमाचार में हमें यह पैग़ाम मिलता है, कि हम सब उसमें एक हो सकते हैं। उसकी मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ होता है, क्योंकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। और उसकी मृत्यु के द्वारा हम सब भी उस में एक होते हैं। क्योंकि हम सब उसी में विश्वास लाते हैं, और उसी की मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि जब हम प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा मानकर उसके पास आते हैं, तो वह हम सबको, चाहे हम कोई भी क्यों न हों, अपनी कलीसिया अर्थात अपनी मन्डली में मिला लेता है। (प्रेरितों २ : ३७, ३८, ४१, ४७)। प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया केवल एक है, और जगत में जहां कहीं भी लोग उसकी आज्ञा को मानकर उससे उद्धार पाते हैं उन सब को वह केवल अपनी उसी एक कलीसिया में मिलाता है। (मत्ती १६:१८)। उसकी कलीसिया एक आत्मिक संगठन है जिसके भीतर वह उन सब लोगों को मिलाता है जो उसकी आज्ञा को मानकर उससे उद्धार पाते हैं। उसमें हम सब एक आत्मिक परिवार बन जाते हैं जिसमें परमेश्वर हमारा पिता और हम सब आपस में भाई और बहन बन जाते हैं।

मित्रो, यह परमेश्वर की योजना है, यह उसकी इच्छा है, कि हम सब उसके पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा उद्धार पाएं। जो हमारे और सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। वही हमारा मेल है। उसी के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ होता है। और उसी में होकर हम सब एक हो जाते हैं। पवित्र बाइबल में परमेश्वर हमें बताता है, कि उसका पुत्र यीशु एक दिन फिर वापस आएगा। और वह अपने उन सब लोगों को जो पृथ्वी पर उसकी कलीसिया में एक हैं उस समय अपने साथ ले जाएगा। ताकि वे हमेशा उसके साथ रहें।

है। (१तीमुथियुस २:५)। वह परमेश्वर के स्वभाव से परिचित था, कि उसके साथ केवल पवित्रता और धार्मिकता ही बास कर सकती है। और वह मनुष्य की कमज़ोरी से परिचित था कि वह पापी और अधर्मी है और अपने आप को पापों से छुटकारा नहीं दिलवा सकता। इसलिये उसने एक निष्कलंक तथा पापरहित जीवन बिताया। और मनुष्य के स्वरुप में होकर भी उसने परमेश्वर की नाई सिद्ध बनकर दिखाया। इसलिये बाइबल उसके विषय में कहती है, कि वह, सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया। (इब्रानियों ५:९)। अर्थात् यीशु मसीह में होकर उसके द्वारा परमेश्वर के पास हम धर्मी ठहराए जाते हैं।

परन्तु यीशु की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल न केवल परमेश्वर के साथ ही हुआ। किन्तु यीशु की मृत्यु हम सब मनुष्यों को भी एक करती है। जगत के प्रायश्चित के लिये उसकी मृत्यु का सुसमाचार संसार के सब लोगों के लिये है। उसने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा, कि तुम सारे,जगत में जाकर सृष्टि के सारे लोगों को उद्धार का सुसमाचार प्रचार करो। और उसने कहा कि जगत में जो कोई भी मुझ में विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा वही उद्धार पाएगा। (मरकुस १६ : १५—१६; मत्ती २८ : १८—२०)। ठीक यही बात पौलुस नाम का प्रभु यीशु मसीह का एक शिष्य बाइबल में लिखकर कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" इस कारण, "अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास न स्वतंत्र; न कोई नर न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।" (गलतियों ३ : २६—२८)। मित्रो, आज मनुष्यों में इस प्रकार की एकता की कितनी बड़ी आवश्यकता है, जबकि आज जाति और धर्म

नए नियम में, लेखक पवित्रात्मा की प्रेरणा द्वारा लिखकर इस प्रकार कहता है, "सो यदि कोई मसीह में है तो तो वह नई सृष्टि है :पुरानी बातें बीत गई हैं ; देखो वे सब नई हो गई। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया.....अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया।" और "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२कुरिन्थियों ५:१७—२१)।

मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग था। पाप मनुष्य और परमेश्वर के बीच में एक बैर के समान था। परन्तु अब जो मसीह में हैं उन्हें सम्बोधित करके बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है,"तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे। पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोंनो को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया।" (इफिसियों २:१२—१४)। परमेश्वर तथा मनुष्य का मेल और कोई व्यक्ति नहीं करवा सकता था, केवल यीशु ही इस बड़े काम को करने के योग्य था। क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा और मनुष्य की निर्बलता दोनों से परिचित था। पृथ्वी पर जन्म लेने से पहिले वह परमेश्वर के साथ वचन के रूप में स्वर्ग में विद्यमान था। परन्तु मनुष्य बनकर वह मनुष्य की समानता में हो गया। अर्थात वह परमेश्वर-मनुष्य या मनुष्य-परमेश्वर है। इसलिये, बाइबल में एक जगह लिखा है, कि वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक बिचव

से वास्तव में प्रेम रखता है। बाइबल में हम एक जगह यूँ पढ़ते हैं कि अपने प्रेम को परमेश्वर ने इस रीति से प्रगट किया कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियों ५:८)। क्या कोई इन्सान अपने बेटे को किसी अच्छे इन्सान के बदले में मरने को दे सकता है ? क्या कोई मनुष्य अपने पुत्र को किसी अपराधी के बदले में मरने को दे सकता है ? तौभी, मित्रो, यीशु की मृत्यु क्रूस के ऊपर परमेश्वर के एकलौते पुत्र की मृत्यु थी। क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन को अपनी सामर्थ से मनुष्य बनाकर जगत में भेजा था। यीशु परमेश्वर का पुत्र था। लेकिन परमेश्वर ने उसे मरने के लिये दे दिया। जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। अर्थात् जब हम ने परमेश्वर को तुच्छ जाना ; जब हम ने उसकी आज्ञाओं पर चलना छोड़ दिया, जब हम ने अपने आपको उससे दूर कर लिया। वह यीशु मसीह में होकर हमें ढूंढ़ने और हमें बचाने के लिये जगत में आ गया। और जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने आपको हमारे बदले में दे दिया। ताकि उसके बलिदान के कारण हम जो अपने पापों में मरे हुए थे जीवन पाएं। पवित्र बाइबल में एक जगह हम पढ़ते हैं, कि "जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।" (१ यूहन्ना ४:९)।

फिर, प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा दूसरी ख़ास बात यह हुई कि उसकी मौत ने परमेश्वर और मनुष्य को एक कर दिया। यीशु मसीह के जगत में आने से पहिले बाइबल के पुराने नियम में पवित्रात्मा की प्रेरणा से लिखा गया था, कि परमेश्वर मनुष्य का उद्धार करने के योग्य है। परन्तु मनुष्य के पाप तथा अधर्म के कामों ने उसे परमेश्वर से ऐसा अलग कर दिया है कि परमेश्वर उसे देखता तक भी नहीं। (यशायाह ५९: १,२)। परन्तु यीशु की मृत्यु के बाद, बाइबल के

१०

जब यीशु की मृत्यु हुई

मित्रो:

इस अवसर के लिये मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं। इस प्रोग्राम में मैं हमेशा आप के सामने कुछ बड़ी ही खास बातों को लेकर उपस्थित होता हूं। और मेरा विश्वास है कि आप आज भी हमेशा की तरह बड़ी ही गम्भीरता के साथ उन बातों को सुनने के लिये तैयार हैं जिन्हें आज हम अपने पाठ में देखने जा रहे हैं। मित्रो, यूं तो संसार में अनेक स्मरणिय दिन हुए हैं, जिनका महत्व हमारे जगत में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बहुत बड़ा है। परन्तु जगत का सबसे बड़ा महान् वह दिन था जिस दिन यीशु की मृत्यु हुई थी। यीशु के जगत में आने से पहिले पवित्र शास्त्र में उसके बारे में लिखा था, कि वह संसार में मरने के लिये आएगा। (यशायाह ५३)। और जब वह आया तो उसने स्वयं कहा कि मैं जगत में मरने के लिये आया हूं। (यूहन्ना ३:१४-१६; १०:१७,१८; १२:२४)। परन्तु यीशु क्यों मरा? उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में पवित्र शास्त्र में इतना अधिक बल क्यों दिया गया है? सो, आईए, आज हम अपने पाठ में इस बात पर विचार करें कि जब यीशु की मृत्यु हुई तो उसके फलस्वरुप क्या हुआ?

सबसे पहिली बात इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने प्रत्यक्ष में यह प्रगट किया कि वह मनुष्य

और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम या अधिकार से बपतिस्मा लेते हैं तो वह हमें अपने राज्य में मिला लेता है। (मत्ती २८ : १९, २०; मरकुस १६ : १५, १६)।

क्या आप उसके राज्य में हैं ? याद रखें कि आत्मिक दृष्टिकोण के केवल दो ही राज्य हैं, अर्थात् शैतान का राज्य जो अंधकार का राज्य है, और परमेश्वर का राज्य जो ज्योति का राज्य है। यदि मनुष्य इन में से एक में नहीं है तो वह निश्चय ही दूसरे में है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि जब हम उसकी आज्ञा को मानते हैं तो वह हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने ज्योति के राज्य में प्रवेश कराता है, जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

परमेश्वर अपनी इच्छा पर चलने के लिये आप को ताकत दे।

और रंग-रंग की अभिलाषाओं और सुख-विलास के दासत्व में थे, और बैर-भाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई। तो उसने हमारा उद्धार किया : और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के द्वारा अधिकाई से उंडेला। जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।" (तीतुस ३.: ३—७)। इसका अर्थ यह है, कि मसीह के राज्य के बाहर पहिले वे उद्धार की आशा और परमेश्वर की सहभागिता से वंचित थे। परन्तु अब उसके राज्य के भीतर वे हमेशा की ज़िन्दगी के वारिस हैं। इसी प्रकार, चौथी विशेष बात हम यह देखते हैं, कि यीशु के राज्य के भीतर होने का अर्थ है, अधकार से मुक्त होना। जब तक मनुष्य यीशु के राज्य के बाहर है वह अंधकार में है। किन्तु यीशु के राज्य के भीतर आकर हम ज्योति में चलते हैं। उसके राज्य के बाहर रहकर चाहे मनुष्य अच्छे वा भले काम भी क्यों न करे वे सब अंधकार में हैं। (यशायहा ५९ : १, २)। परन्तु जब हम यीशु में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानते हैं तो परमेश्वर हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर उसके राज्य में प्रवेश कराता है। (रोमियों ६ : १६, १७)। और उसके राज्य के भीतर हमें अंधकार से छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

यही कारण है, मित्रो, कि प्रभु यीशु ने एक जगह उपदेश देकर कहा था, कि मनुष्य को चाहिए कि वह सबसे पहिले उसके राज्य और धर्म की खोज करे। (मत्ती ६ : ३३)। क्योंकि उसके राज्य के बाहर मनुष्य अंधकार में है। जब हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, और अपने वर्तमान जीवन से मन फिराते हैं और उसकी आज्ञानुसार पिता

के भीतर होने का अर्थ है, ज्योति में होना। क्योंकि उसके राज्य के भीतर हमारी सहभागिता उसके साथ होती है, और वह ज्योति में है। पवित्र बाइबल में लिखा है, "पर यदि जैसा वह ज्योति में है वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" (१ यूहन्ना १ : ७)। दूसरे, हम यह देखते हैं कि उसके राज्य के भीतर हमारी संगति पवित्र लोगों के साथ होती है। क्योंकि जितने भी लोग उसके राज्य के भीतर है, वे सब पवित्र हैं। उन सब ने यीशु मसीह में विश्वास किया है कि वह हमारे पापों के कारण बलिदान हुआ है; वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। उन सभों ने पाप से अपना मन फिराया है, और आगे को पाप का जीवन न व्यतीत करने का निश्चय किया है। और उन सब लोगों ने अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है। इसलिये वे पवित्र हैं। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, कि उसके राज्य के भीतर जो लोग हैं वे कभी पाप कर ही नहीं सकते। वे सब अन्य लोगों की तरह मनुष्य हैं, और मनुष्य होने के कारण उनसे पाप हो सकता है। परन्तु क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह में हैं, जो हम सब के पापों का प्रायश्चित है, (१ यूहन्ना २ : २), इसलिये वे पाप के दन्ड से मुक्त हैं। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। (रोमियों ८ : १)। यानि वे शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलते हैं। और फिर तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं, कि यीशु के राज्य के भीतर हम पवित्र लोगों के साथ मीरास में सम्भागी होते हैं। उसके राज्य के लोगों को सम्बोधित करके पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है, "क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए,

बाद वह फिर मे जी उठा। तो परमेश्वर का वचन हमें बताता है, कि उसके स्वर्गारोहण के दस दिन के बाद पवित्रात्मा सामर्थ सहित उसके चेलों पर उतरा और वे पवित्रात्मा से भर गए। उसी दिन उन्होंने यीशु का सुसमाचार प्रचार किया। और जब सुननेवालों ने उन चेलों से पूछा कि अब हमें क्या करना चाहिए ? तो लिखा है, कि, "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें; तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे···सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।" और फिर आगे लिखा है, कि वे "परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों २ : ३८, ४१, ४७)। यहाँ से हम देखते हैं, कि जिस प्रकार प्रभु ने प्रतिज्ञा की थी, ठीक वैसे ही सामर्थ सहित उसके राज्य की स्थापना हुई। पतरस ने लोगों को बताया कि वे उसके भीतर किस प्रकार प्रवेश कर सकते हैं। और जो उद्धार पाते थे, अर्थात् यीशु मसीह में विश्वास लाकर, मन फिराते थे और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते थे, उन्हें प्रभु प्रतिदिन अपने राज्य में अर्थात् अपनी कलीसिया में मिला देता था।

इसी कारण अभी कुछ ही देर पहिले हमने बाइबल में से कुलुस्सियों नाम की पत्री में से इस प्रकार पढ़ा था "और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सम्भागी हों। उसी ने हमें अधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिसमें हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" यहां मैं आपका ध्यान कुछ ख़ास बातों पर दिलाना आवश्यक समझता हूं। अर्थात् यीशु के राज्य

अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश दिलाया। इसलिए यीशु भविष्य में राज्य करने को नहीं आ रहा है, क्योंकि वह अभी राज्य कर रहा है। इस बात को समझने की आज हमें बड़ी ही अधिक आवश्यकता है। क्योंकि यहूदियों की तरह आज अनेक अन्य लोग भी इस बात की आस लगाए बैठे हैं कि भविष्य में मसीह पृथ्वी पर आकर अपने राज्य की स्थापना करेगा। वे मसीह के एक ऐसे राज्य की बाट जोह रहें हैं जो पृथ्वी पर के अन्य राज्यों के समान होगा। परन्तु पवित्र बाइबल में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने अपने बारह चेलों से यह प्रतिज्ञा की थी कि उसके राज्य की स्थापना उन्हीं के जीवनकाल में होगी। अर्थात् यीशु ने उन बारह चेलों की मृत्यु होने से पहिले अपने राज्य की स्थापना करने की प्रतिज्ञा की थी। (मरकुस ९ : १)। और उसने यह भी बड़े ही स्पष्ट शब्दों में घोषणा की थी, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है। अर्थात् वह भौतिक या पृथ्वी पर के अन्य राज्यों के समान नहीं है, परन्तु उसका राज्य आत्मिक है। (यूहन्ना १८ : ३६)। सो हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि मसीह का राज्य आत्मिक स्वभाव का है और वह उतना ही पुराना है जितनी कि स्वयं मसीहीयत, अर्थात् उसकी स्थापना हुए १९०० साल से ऊपर हो चुके हैं।

एक अन्य स्थान पर बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि यीशु ने अपने चेलों से कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा (मत्ती १६ : १८)। और पतरस नाम के एक चेले से उसने कहा कि मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा। (मत्ती १६ : १९)। अर्थात् कलीसिया या राज्य में प्रवेश करने का द्वार पतरस खोलेगा। इसी प्रकार, मरकुस ९ : १ में यीशु ने कहा था अपने बारह चेलों से कि उसका राज्य सामर्थ के साथ आएगा। अब इन बातों को ध्यान में रखकर हम देखते हैं, कि इन सब बातों के बाद जब यीशु की मृत्यु हुई और जब तीन दिन के

९

यीशु का राज्य

मित्रो :

मेरा विश्वास है कि आपने यीशु के राज्य के बारे में अवश्य ही सुना है। यीशु का राज्य वास्तव में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण वस्तु है। क्योंकि यीशु से हमें जो कुछ भी प्राप्त होता है वह सब उसके राज्य के भीतर ही प्राप्त होता है। यीशु से उद्धार हमें उसके राज्य में ही मिलता है; उसकी सारी आशीषें हमें उससे उसके राज्य के भीतर ही मिलती हैं। यही कारण है कि बाइबल में लिखा है कि जब यीशु के द्वारा मनुष्य का उद्धार होता है तो परमेश्वर उसे अपने प्रिय पुत्र यीशु के राज्य में मिला लेता है। किन्तु आईए, इस बात को हम पवित्र बाइबल में से ही पढ़कर देखें। कुलुस्सियों १ : १२-१४ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों। उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिसमें हमें छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।"

यहाँ मैं सबसे पहिले आपका ध्यान इस बात पर दिलाने जा रहा हूं, कि परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु का राज्य कोई ऐसी वस्तु नहीं हैं जिसकी स्थापना भविष्य में होने जा रही है। परन्तु यीशु का राज्य अभी वर्तमान है। क्योंकि लिखा है, कि परमेश्वर ने उन लोगों को

मित्रो, ये तमाम बातें जो अभी हमने प्रभु यीशु के सम्बन्ध में देखी इस बात को प्रमाणित करती हैं कि केवल यीशु ही वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है और संसार का उद्धारकर्त्ता है। पवित्र बाइबल कहती है कि हमें अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए प्रभु यीशु में विश्वास लाना चाहिए और जिस प्रकार उसने आज्ञा दी है हम सबको अपने-अपने पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए जल के भीतर बपतिस्मा लेना चाहिए। (लूका १३:३; प्रेरितों २:३८; मरकुस १६ : १६)।

आज बहुतेरे लोग यीशु को केवल एक अच्छे शिक्षक या एक अवतार के रूप में मानते हैं। परन्तु, मित्रो, यीशु को हमें परमेश्वर का पुत्र मानना चाहिए, और उसके बलिदान के कारण हमें उसे जगत का उद्धारकर्त्ता ग्रहण करना चाहिए। हमें उसमें विश्वास करना और उसकी आज्ञाओं को मानना चाहिए। क्योंकि बिना उसके परमेश्वर के साथ हमारा मेल नहीं हो सकता। वह उद्धार का मार्ग है। उसमें हमें सच्चाई मिलती है। वह हमें अनन्त जीवन देता है।

के सम्बन्ध में लिखने वाला बाइबल का एक लेखक एक जगह लिख-कर यों कहता है, कि यीशु ने और भी बहुतेरे चिन्ह दिखाए जो बाइबल की पुस्तकों में लिखे नहीं गए। परन्तु जो लिखे गए हैं वे इसलिये लिखे गए हैं कि लोग उनके बारे में पढ़कर यह विश्वास करें कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके द्वारा जीवन पाएं। (यूहन्ना २०:३०,३१)।

किन्तु, फिर जगत के इतिहास में एक सबसे अधिक आश्चर्यपूर्ण घटना यीशु के सम्बन्ध में यह घटी कि वह अपनी मौत के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठा। और बड़ी ही विशेष बात इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं कि यीशु ने अपनी मृत्यु से पहिले ही इस बात की भविष्य-द्वाणी कर दी थी कि वह अपनी मौत के बाद तीसरे दिन फिर से जो उठेगा। इसलिये हम देखते हैं कि उसकी कब्र पर उसको मारनेवालों ने कड़ी निगरानी रखने के लिये पहरा लगा रखा था। परन्तु यीशु को मुर्दों में से जी उठने से न तो चट्टान में खुदी वह मजबूत कब्र रोक सकी और न शक्तिशाली रोमी पहरेदार। शताब्दियों से अनेक लोग इस बात को मानने से इन्कार करते रहे हैं, किन्तु आज तक कोई ऐसा मनुष्य नहीं हुआ जो यीशु के जीं उठने को झूठा प्रमाणित कर सके। क्योंकि यीशु के पुनरुत्थान के प्रमाण इतने अधिक हैं कि उन्हें नज़र-अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। और सबसे बड़ी बात यह है इस सम्बन्ध में कि यीशु को रोम की सरकार ने क्रूस पर चढ़ाया था। इसलिये यदि यीशु वास्तव में न जी उठा होता तो वे उसकी लोथ को कब्र में से खुदवाकर लोगों के सामने पेश कर देते और इस प्रकार वे उन लोगों का मुंह हमेशा के लिए बन्द कर देते जो जोश और हियाव से भरकर सब लोगों के बीच में यीशु के जी उठने का प्रचार कर रहे थे।

के हाथों पकड़वाएगा। उन्होंने कहा था, कि वह एक क्रूस के ऊपर लटकाया जाएगा, और मृत्यु के बाद वह एक धनवान की कब्र के भीतर गाड़ा जाएगा। और फिर उन्होंने यह भी कहा था, कि वह अपनी मौत के बाद फिर से जी उठेगा। (भजन० १६; भजन० २२; यशायाह ५३)। और बाइबल के नए नियम में हम इनमें से हर एक बात के बारे में पढ़ते हैं, कि यीशु के जीवन में ये सब बातें ठीक ऐसे ही घटीं। परन्तु यदि यीशु आपकी और मेरी तरह कोई एक साधारण इन्सान होता तो ये सब बातें उसके बारे में कैसे पूरी होतीं? क्या यीशु के अतिरिक्त संसार में कोई भी अन्य मनुष्य इस तरह अद्भुत तथा आश्चर्य-पूर्ण ढंग से कभी उत्पन्न हुआ? संसार में सभी अन्य मनुष्य या तो किसी विशेष शिक्षा के कारण या किसी परिस्थिति या वातावरण के कारण कुछ न कुछ बने। परन्तु यीशु के विषय में परमेश्वर ने उसके जन्म से पूर्व ही अपनी इच्छा को प्रकट कर दिया था।

किन्तु, फिर हम यीशु के आश्चर्यपूर्ण कामों की ओर देखते हैं। आज संसार में बहुतेरे लोग आश्चर्यपूर्ण काम करने का दावा करते हैं, और वे यहां तक भी कहते हैं कि वे ये सब काम परमेश्वर की सामर्थ से करते है। परन्तु उनमें से एक भी मनुष्य कोई ऐसा काम नहीं कर सकता जिस प्रकार के काम यीशु ने किए। उसके कह देने भर से कोढ़ी तत्काल चंगे हो जाते थे। उसके हल्के से स्पर्ष से लोगों के कटे हुए अंग फिर से लग जाते थे। अंधे, लंगड़े, अपाहिज और हर तरह की बीमारीवाले उसके छूने से चंगे हो जाते थे। वह पुकारता था और मुर्दे जी उठते थे। वह एक आदमी के भोजन से हज़ारों लोगों की भूख मिटा देता था। वह पानी और आंधी को डांटता था और वे तुरन्त थम जाते थे। इतिहास यीशु के आश्चर्य-पूर्ण कामों से भरा पड़ा है। परन्तु क्या ये सब बातें इस बात को प्रमाणित नहीं करतीं कि यीशु सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है? यीशु

की पुस्तक में पढ़ते हैं, कि परमेश्वर की सामर्थ से एक कुमारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी। (यशायाह ७:१४)। अर्थात् यीशु का जन्म मनुष्य की इच्छा से नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से हुआ। जब परमेश्वर ने आरम्भ में सृष्टि की रचना की थी तो उसने प्रत्येक वस्तु को आश्चर्य जनक ढंग से उत्पन्न किया था। जब उसने आदम और हव्वा को बनाया था तो उसने उन्हें आश्चर्य पूर्ण रूप से बनाया था। इसलिये जब उसके पुत्र यीशु का जन्म हुआ तो उसने उसे आश्चर्यपूर्ण ढग से पृथ्वी पर उत्पन्न किया। क्योंकि यदि यीशु का जन्म साधारण मनुष्यों की तरह होता तो कौन स्वीकार करता कि वह परमेश्वर का पुत्र है ? परमेश्वर वह सब कुछ कर सकता है जो मनुष्य कर सकता है। परन्तु जो काम परमेश्वर कर सकता है उसे मनुष्य नहीं कर सकता। सो यीशु का अद्भुत जन्म उसे ससार के सभी अन्य मनुष्यों से भिन्न कर देता है। क्योंकि वह परमेश्वर की पहिले से ठहराई हुई मनसा से और उसकी इच्छा तथा उसकी सामर्थ से एक निराले ढग से उत्पन्न हुआ था। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में जगत का उद्धार करने को भेजा था। जैसा कि पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३ : १६)। यहां "दे दिया" से अर्थ है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान कर दिया।

परन्तु यीशु के जन्म से पूर्व भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर की प्रेरणा से उभारे जाकर न केवल उसके जन्म के ही सम्बन्ध में कहा था। लेकिन उन्होंने प्रत्येक अन्य उस बात का भी वर्णन किया था जो उसके जीवन में घटनेवाली थी। उन्होंने बताया था, कि उस पर झूठे दोष लगाए जाएंगे, और उसका एक मित्र ही उसे उसके शत्रुओं

इस बारे में सबसे पहिली बात जो मैं आपके सामने रखना चाहता हूं, वह यह है, कि यीशु का जन्म और उसका जीवन और उसकी मौत तथा पुनःरुत्थान, इन सबके बारे में हमें बाइबल के पुराने नियम की उन पुस्तकों में मिलता है, जो यीशु के पृथ्वी पर आने से, अर्थात उसके जन्म से कई सौ वर्ष पहिले लिखी गई थीं। यीशु इस पृथ्वी पर लगभग तेंतिस वर्ष तक ही रहा, और जिन लोगों ने इतिहास में उसके जन्म और जीवन और मृत्यु तथा पुनःरुत्थान के विषय में अपनी-अपनी पुस्तकों में लिखा, उनकी लिखी प्रत्येक बात पुराने नियम में लिखी मसीह से सम्बन्धित बातों से इस प्रकार मिलती है जैसे कि मानो इन सभी पुस्तकों को केवल एक ही मनुष्य ने लिखा हो। सो यह बात बड़ी ही विचित्र है, कि यीशु के सम्बन्ध में जिन बातों के बारे में हम नए नियम में पढ़ते हैं, उन सबका वर्णन हमें पुराने नियम की उन पुस्तकों में मिलता है जो यीशु के जन्म से कई सौ साल पहिले लिखी गई थीं! और एक बड़ी ही ख़ास बात इस विषय में हम यह देखते हैं, कि भविष्यद्वक्ताओं ने यीशु के जन्म से सैकड़ों वर्ष पहिले उसके बारे में जो-जो कहा था वह सब ठीक वैसे ही पूरा हुआ। जैसे कि यीशु के जन्म के सम्बन्ध में हम पढ़ते हैं, लूका अपनी पुस्तक में लिखकर हमें बताता है, कि गलील के नासरत नगर में मरियम नाम की एक कुंवारी रहती थी जिस पर परमेश्वर के एक दूत ने प्रगट होकर कहा, कि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। इसलिये तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। और जब मरियम यह वचन सुनकर आश्चर्य चकित रह गई, तो स्वर्गदूत ने उस से यों कहा, कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। (लूका २:३०, ३५)। परन्तु इस घटना से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा था, जैसा कि हम यशायाह

मैं यीशु में विश्वास क्यों करूं ?

मित्रो :

संसार में शायद ही कोई ऐसा मनुष्य होगा जिसने यीशु के बारे में कभी कुछ न सुना हो। आज संसार भर में रेडियो और टेलेविज़न के द्वारा उसका प्रचार किया जा रहा है। चित्रकार अपनी कल्पना से उसकी तस्वीरें बना रहे हैं। उसके विषय पर लिखा हुआ साहित्य आज संसार की लगभग सभी मुख्य भाषाओं में प्राप्त किया जा सकता है। सामाजिक दृष्टिकोण से आज उसके जीवन पर आधारित फ़िल्में बनाई जा रही हैं। और धार्मिक दृष्टिकोण से उसके जन्म तथा पुनः रुत्थान की यादगार में लोगों ने क्रिसमस और ईस्टर जैसे दिन मानने के लिये नियुक्त कर दिए हैं। परन्तु यह मसीह यीशु कौन है ? मैं उसमें विश्वास क्यों करता हूं ? या मुझे उसमें विश्वास क्यों करना चाहिए ? क्या वह लोगों के अनेक "अवतारों" तथा "भगवानों" में से कोई एक है ? क्या वह अनेकों भविष्यद्वक्ताओं तथा गुरुओं में से कोई एक है ? ये प्रश्न बड़े ही महत्वपूर्ण हैं, और विशेषकर इसलिये क्योंकि एक जगह यीशु ने अपने बारे में यूं कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन केवल मैं ही हूं, और मेरे बिना परमेश्वर के पास कोई मनुष्य नहीं पहुच सकता। (यूहन्ना १४ : ६)। सो यदि यह सच है, तो पापों से उद्धार पाने के लिये आवश्यक है कि आज प्रत्येक मनुष्य यीशु में विश्वास करे। परन्तु शायद आप पूछें, 'क्यो" ? सो आईए, इस थोड़े से समय में हम इस सम्बन्ध में कुछ ख़ास बातों पर विचार करें।

मित्रो, जिस प्रकार से कि यह सच है कि संसार में प्रवेश करने के लिये प्रत्येक मनुष्य शारीरिक रूप से जन्म लेता है। उसी प्रकार से यह भी एक सच्चाई है, कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को नया बनना आवश्यक है। और वह नई ज़िन्दगी हमें यीशु मसीह में मिलती है। यीशु के सम्बन्ध में पवित्र बाइबल कहती है, कि, "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दन्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।" (यूहन्ना ३ : १७)। यीशु अपने बलिदान के कारण जगत के पापों का प्रायश्चित है। इसलिये जब हम उसे मान लेते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं तो क्रूस पर बहे उसके लोहू के कारण परमेश्वर हमारे सब पाप क्षमा करता है। तब हम एक नए मनुष्य बन जाते हैं, अर्थात पापी से पवित्र बन जाते हैं। और फिर हम यीशु के जीवन और उसकी शिक्षाओं का अनुसरण करते हैं, ताकि हम फिर से उस पुराने जीवन में न चले जाए, जिस से हमारा छुटकारा यीशु के बहाए लोहू के द्वारा हुआ है।

मित्रो, यह परमेश्वर की योजना है, यह उसकी इच्छा है, जिसे उसने अपने वचन की पुस्तक में जगत पर प्रगट किया है। वह जगत का उद्धार करना चाहता है। परन्तु यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो वह उसके राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्या आपने परमेश्वर की इच्छानुसार नया जन्म प्राप्त कर लिया है ? आपको नया बनने की आवश्यकता है। और आप एक नए मनुष्य बन सकते हैं। परमेश्वर के पुत्र यीशु में विश्वास लाकर, उसकी आज्ञा को मानकर और उसके जीवन का अनुसरण करके। मेरी आशा हैं कि आप इस बड़ी ही आवश्यक बात के ऊपर ध्यान देंगे और अपने पुराने जीवन को छोड़कर आज ही उस नए जीवन को प्राप्त करने का निश्चय करेंगे जो हमें केवल यीशु में मिलता है।

५ : १७) । यीशु मसीह में होने का अर्थ है उसका अनुसरण करना, और उसकी शिक्षाओं पर चलना; उसके स्वभाव को अपनाना और उसे अपने जीवन का आदर्श बनाना । जब हम यीशु में होकर उसका अनुसरण करते हैं, तो हम उसके समान नम्र और दीन बनते हैं । हम उसकी तरह अच्छा जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करते हैं, और केवल उन बातों की खोज करते हैं जिनसे भलाई उत्पन्न होती है । हम गाली सुनकर गाली नहीं देते लेकिन यीशु की तरह हम अपने शत्रुओं के लिये प्रार्थना करते हैं और जो हमें सताते हैं हम उनके लिये आशीष चाहते हैं । यीशु के समान हम परमेश्वर की हर एक आज्ञा का पालन करते हैं, और अपना प्रत्येक काम हम परमेश्वर की बड़ाई के लिये करते हैं ।

परन्तु इस नए जीवन का आरम्भ कैसे होता है ? जब हम इस बात का अनुभव करते हैं कि हम पापों के बोझ से दबे हुए हैं और अपने पापों से मुक्ति पाना चाहते हैं । जब हम यीशु के पास इस निश्चय के साथ आते हैं कि हम अपना जूआ उसे देकर उसका जूआ अपने ऊपर उठाएंगे । जब हम यीशु में यह विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र है और वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया । जब हम अपने सब पापों से मन फिराकर, यीशु की दी आज्ञानुसार अपने वर्तमान पापी जीवन को पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा लेकर जल की कब्र के भीतर गाड़ देते हैं । इस प्रकार, परमेश्वर की इच्छानुसार हम अपने पुराने जीवन से मुक्त होकर एक नए जीवन में प्रवेश करते हैं । क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, कि जब तक मनुष्य जल और आत्मा से नए सिरे से जन्म नहीं लेता वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता । (यूहन्ना ३:३, ५) ।

प्रेम करते है कि पहिले उसने हमसे प्रेम किया। यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है : क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता। और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।" (१ यूहन्ना ३ : १०, १४, १५, १६, १८; ४ : ७—१२, १६, १९-२१)।

मित्रो, इस प्रकार हम देखते हैं, कि वह यूहन्ना जो कुछ समय पहिले लोगों को आग से भस्म कर दिया चाहता था, अब लोगों को आपस में प्रेम रखने का उपदेश दे रहा है। क्योंकि अब वह वास्तव में यीशु का अनुसरण करने लगा था। और ठीक ऐसा ही बदलाव हम सब अपने जीवनों में भी उस समय अनुभव करते हैं जब हम सब कुछ छोड़कर पूरे मन से यीशु का अनुसरण करने लगते हैं। यीशु ने कहा है, कि, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती ११ : २८—३०)। इसका अर्थ यह है, कि जब हम यीशु के पास आते हैं तो वह संसार का जूआ हमारे कांधों पर से हटाकर उसके स्थान पर अपना जूआ हमारे ऊपर रख देता है। क्रोध और बैर के स्थान पर वह हमें प्रेम रखने की आज्ञा देता है। घमन्ड के स्थान पर वह हमें दीन बनना सिखाता है। और पृथ्वी पर की वस्तुओं की खोज में लगे रहने के विपरीत वह हमें स्वर्गीय वस्तुओं की खोज करने की आज्ञा देता है। यही कारण है कि बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि जो मनुष्य यीशु मसीह में है वह एक नई सृष्टि है अर्थात् वह एक नया इन्सान है। (२ कुरिन्थियों

और उसके उपदेशों को सुना था, और वह उसके आदर्श को पालन करना चाहता था। उसने प्रेम के सम्बन्ध में अपनी पत्रियों में इतना अधिक लिखा है कि आनेवाले वर्षों में वह गर्जन के पुत्र के विपरीत प्रेम का प्रेरित कहलाने लगा। यूहन्ना ने बाइबल में पाँच किताबों को लिखा है। और उनमें से एक में वह लिखकर इस प्रकार कहता है, "जो कोई धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता···जो प्रेम नहीं रखता वह मृत्यु की दशा में रहता है। जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता। हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाईयों के लिए प्राण देना चाहिए···हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है : और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए। परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हममें बना रहता है; और उसका प्रेम हममें सिद्ध हो गया है···और जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उसकी प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उसमें बना रहता है···हम इसलिए

याकूब मछलियां पकड़ा करते थे। परन्तु एक दिन यीशु ने जब अपने पीछे हो लेने को उन्हें बुलाया तो वे अपने जाल और नाव को छोड़कर उसके पीछे हो लिए थे। ये दोनों भाई स्वभाव से बड़े ही गुस्सेवाले थे, अर्थात् उन्हें बड़ी ही जल्दी क्रोध आ जाता था, सो यीशु ने उन दोनों भाईयों का नाम "गर्जन के पुत्र" रखा था। (मरकुस ३ : १७)। एक दिन की बात है, कि यीशु ने अपने चेलों के साथ यरुशलेम नगर को जाने का निश्चय किया। यरुशलेम यहूदियों का नगर था। परन्तु यरुशलेम पहुंचने से पहिले यीशु और उसके चेलों को मार्ग में रुकने की आवश्यकता पड़ी। सो वे सामरियों के एक गांव में रुकना चाहते थे जो रास्ते में था। परन्तु क्योंकि सामरी लोग यहूदियों से बैर रखते थे इसलिए उन्होंने यीशु और उसके साथियों को अपने गांव में रुकने से मना कर दिया। याकूब और यूहन्ना जो उस समय यीशु के साथ थे यह बात देखकर क्रोध से भर गए। और उन्होंने यीशु से कहा, कि प्रभु क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे ? लेकिन यीशु ने फिरकर उन्हें डांटा और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो, क्योंकि मैं लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं परन्तु बचाने के लिए आया हूं। सो वे किसी और गांव में जाकर ठहर गए। (लूका ९ : ५१, ५६)।

यहाँ मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं, कि जिस यूहन्ना को यहाँ हम आकाश से आग गिराकर लोगों को भस्म कर देने की बात सुन रहे हैं, वही यूहन्ना आगे चलकर बाइबल में सबसे अधिक प्रेम के विषय में लिखता है, और यहाँ तक कि वह कहता है कि जो मनुष्य, मनुष्य के साथ बैर रखता है वह हत्यारा है। कितना बड़ा बदलाव हम इस मनुष्य के जीवन में देखते हैं। वह क्रोध से प्रेम में बदल गया। केवल इसलिए क्योंकि वह यीशु के पीछे हो लिया था, और उसकी संगति में रहा था। उसने यीशु के जीवन को देखा था

यीशु में नया जीवन

मित्रो :

आईए, अब हम अपने बाइबल अध्ययन को आरम्भ करें। हमेशा की तरह आज फिर से मैं आपका ध्यान प्रभु यीशु मसीह के ऊपर दिलाना चाहता हूं। जब हम प्रभु यीशु के जीवन पर विचार करते हैं, तो उसके सम्बन्ध में एक बड़ी ही विशेष बात हम यह देखते हैं, कि उसके पास एक ऐसी अद्‌भुत शक्ति थी जिसके द्वारा वह वस्तुओं के महत्व को और मनुष्यों के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से बदल डालता था। यह बात बड़ी ही विचारपूर्ण है, कि जिन लोगों को यीशु ने अपना चेला होने के लिए चुना था वे बिल्कुल साधारण और गरीब लोग थे, और न वे कुछ खास पढ़े-लिखे थे। किन्तु तौभी उन्होंने इतने बड़े-बड़े महत्वपूर्ण काम किए और बाइबल की पुस्तकों में ऐसी-ऐसी महान् शिक्षाओं को लिखा जो उन जैसे मनुष्यों के लिए असम्भव था। परन्तु तौभी यीशु ने उन ग़रीब, साधारण और अनपढ़ लोगों को चुन लिया और उन्हीं के द्वारा अपने सुसमाचार को सारे जगत में फैलाया। और इस प्रकार यीशु ने यह प्रमाणित कर दिया कि मनुष्य चाहे कोई भी क्यों न हो, यदि वह सब कुछ छोड़के उसके पीछे हो लेगा तो वह उसमें होकर एक नया इन्सान बन जाएगा।

इस सम्बन्ध में एक बड़ा ही अच्छा उदाहरण हमें यूहन्ना नाम के यीशु के एक चेले के बारे में मिलता है। यूहन्ना और उसका भाई

मनुष्य को दीनता तथा नम्रता की आवश्यकता है, और मनुष्य का प्रत्येक कार्य इस प्रकार का होना चाहिए जिससे परमेश्वर की बड़ाई तथा प्रशंसा हो सके। दूसरे स्थान पर हम यह सीखते हैं, कि अन्य लोगों के प्रति हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए जैसा कि हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ रखें। तीसरे, हमारी परमेश्वर-भक्ति मनुष्यों को दिखाने के लिये नहीं, परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये और उसकी इच्छा के अनुसार होनी चाहिए। चौथी बात, जिसे हम प्रभु यीशु के इस उपदेश से सीखते हैं, वह यह है कि हमें जगत की वस्तुओं को प्राप्त करने की चिन्ता छोड़कर, सबसे पहिले परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करनी चाहिए। और पांचवें स्थान पर यीशु के उपदेश से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य के भीतर हम केवल उसके सकरे मार्ग के ऊपर चलकर ही प्रवेश कर सकते हैं। और उस सकरे मार्ग का अर्थ है, परमेश्वर की दी हुई आज्ञाओं को मानना।

परमेश्वर ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने पुत्र यीशु को क्रूस के ऊपर बलिदान किया है। और पवित्र बाइबल में उसकी आज्ञा यह है, कि हम उसके पुत्र पर विश्वास लाए, और अपने पापों से मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा के लिये पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के अधिकार से बपतिस्मा लें। (यूहन्ना ३ : १६; मत्ती २८ : १९, २०; प्रेरितों २ : ३८)।

अब परमेश्वर आप को आशीष दे, और अपनी बातों को समझने और उन पर चलने के लिये सामर्थ दे।

सो तुम उनकी नाईं न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकता है।"

और फिर अपने उपदेश में यीशु ने आगे कहा, "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा·····इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे ? और क्या पीएगे ? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे ? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं ? इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म को खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

और फिर प्रभु ने उपदेश दिया, कि, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौडा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।"

"जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

यहां, मित्रो, प्रभु यीशु के इस उपदेश से हम पांच बड़ी ही विशेष तथा आवश्यक बातों को सीखते हैं। अर्थात्, सबसे पहिले तो हम यह देखते हैं, कि एक सुखी तथा फलदायक जीवन व्यतीत करने के लिये

लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता ? और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली-भांति देखकर निकाल सकेगा।"

"इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।"

"सावधान रहो !" यीशु ने फिर कहा, कि, "तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल नहीं पाओगे। इसलिये, जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना फल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दहिना हाथ करता है, उसे तेरा बांया हाथ न जानने पाए। ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता, जो गुप्त देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके अपने पिता से, जो गुप्त में है, प्रार्थना कर; और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। प्रार्थना करते समय अन्य जातियों की नाई बक-बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी।

को बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुमसे पहिले थे इसी रीति से सताया था।"

और फिर उसने कहा, कि, "तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा ? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है, वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके, कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।"

"तुम सुन चुके हो", प्रभु यीशु ने कहा, 'कि कहा गया था, कि अपने पड़ौसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो। जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान ठहरोगे, क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए क्या फल होगा ? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते ? और यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो ? क्या अन्य जाति भी ऐसा नहीं करते ? इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।"

"दोष मत लगाओ, यीशु ने आगे कहा, "कि तुम पर भी दोष न

देना आरम्भ किया था, तो उसने अपने लिये कुछ विशेष चेलों को चुना था। वे चेले यीशु की मृत्यु तक उसके साथ रहे थे। उन्होंने उसके जीवन को देखा था। उन्होंने उसके आश्चर्यकर्मों को देखा था, और उसके उपदेशों को स्वयं सुना था। यीशु के उन्हीं चेलों ने बाइबल के नए नियम की पुस्तकों में यीशु के अद्भुत जीवन तथा उसके आश्चर्यजनक कामों के बारे में और उसके उपदेशों को ज्यों का त्यों लिखा है। आज हम अपने पाठ में विशेष रूप से यीशु के उन उपदेशों पर ध्यान करेंगे, जिन्हें आम-तौर पर पहाड़ी उपदेश कहा जाता है, क्योंकि ये उपदेश यीशु ने एक पहाड़ी के ऊपर बैठकर लोगों को दिए थे। यीशु के इन महत्वपूर्ण उपदेशों का वर्णन हमें बाइबल में मत्ती की पुस्तक के ५, ६ तथा ७ अध्यायों में मिलता है। यूँ तो इस थोड़े से समय में हम इन तीनों अध्यायों को पूर्ण रूप से न पढ़ सकेंगे। किन्तु हम इतना अवश्य पढ़ेंगे जिस से हम यह अवश्य जान लें, कि यीशु के इस उपदेश से हमें क्या विशेष शिक्षाएं मिलती हैं।

अपने उपदेश का आरम्भ यीशु ने इन धन्य शब्दों के साथ किया, उस ने कहा: "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे। धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं। क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार

६

यीशु एक महान् शिक्षक था

मित्रो :

यूँ तो संसार में अनेक बड़े-बड़े शिक्षक हुए हैं, परन्तु यीशु वास्तव में एक महान् शिक्षक था। हम अन्य लोगों की शिक्षाओं की तुलना कर सकते हैं, परन्तु यीशु की शिक्षाओं की तुलना नहीं की जा सकती। क्योंकि वह लोगों को मनुष्य के ज्ञान से नहीं परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा से शिक्षा देता था। बाइबल में यीशु के बारे में लिखा है, कि वह परमेश्वर की ओर से एक शिक्षक होकर पृथ्वी पर आया था। (यूहन्ना ३ : २)। जब वह लोगों को शिक्षा देता था तो वे उसके उपदेश को सुनकर आश्चर्य-चकित रह जाते थे, क्योंकि वह उन्हें अन्य उपदेशकों की नाईं नहीं परन्तु एक अधिकारी के समान उपदेश देता था। (मरकुस १:२२)। यीशु की शिक्षाएं अत्याधिक महत्वपूर्ण होने पर भी इतनी अधिक सरल तथा साधारण होती थीं कि उन्हें मामूली और अनपढ़ लोग भी आसानी से समझ सकते थे। वह छोटी-छोटी साधारण वस्तुओं के दृष्टान्त और उदाहरण देकर लोगों को उनके द्वारा बड़े-बड़े मुख्य पाठ सिखाया करता था। यूँ तो उन उपदेशों को यीशु ने लोगों के सम्मुख आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व रखा था। परन्तु यीशु के वे उपदेश हमारे लिये आज भी उतने ही आवश्यक हैं जितने कि उन लोगों के लिये थे जिन्होंने उनको स्वयं यीशु के मुख से सुना था। इसी कारण जब यीशु ने उपदेश

तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन आपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" "इस कारण" लिखा है, कि, "परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।" फिलिप्पियों २ : ५—९)।

मित्रो, प्रभु यीशु के स्वभाव से हम बड़े-बड़े अच्छे पाठ सीखते हैं। यीशु का स्वभाव वास्तव में अपनाने की वस्तु है। और मेरी आशा है, कि आज के अपने पाठ से शिक्षा लेकर हम यीशु के समान बनने की कोशिश करेंगे।

सिखाई। उसने कहा कि जबकि अन्य धार्मिक अगुवे, अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं : वे अपने तावीज़ों को चौड़ा करते, अर्थात् अपनी डिग्रियों को बढ़ाते हैं। और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं, अर्थात् लम्बे चोगे पहिनते हैं। और ज़ेवनारों में मुख्य जगहें और सभाओं में मुख्य आसन चाहते हैं। और बाज़ारों में नमस्कार और मनुष्यों में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है। "परन्तु", यीशु ने अपने चेलों से कहा, "तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरू है : और तुम सब भाई हो। और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात मसीह। जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा। और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।" (मत्ती २३ : ८—१२)। मित्रो, प्रभु यीशु के इस उपदेश में हमें कितनी अधिक नम्रता दिखाई पड़ती है। वह एक सेवक था, और वह चाहता है कि उसके अनुयायी उसके सेवकाई के स्वभाव को धारण करें। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई पिता अर्थात पादरी कहलाए, क्योंकि हम सब का केवल एक ही पिता है, और वह परमेश्वर है। उसने कहा, परन्तु तुम सब आपस में भाई हो। मित्रो, अकसर कुछ लोग धार्मिक दृष्टिकोण से ऐसे-ऐसे नामों से कहलाने की इच्छा रखते हैं, जिनके द्वारा वे अपने आप को अन्य लोगों से अलग और उनसे ऊंचा बनाना चाहते हैं। परन्तु यह यीशु मसीह के स्वभाव के विरुद्ध है। वह चाहता है कि हम उसकी तरह सेवक बनें और अपने आप को छोटा बनाकर रखें ताकि मनुष्य नहीं परन्तु परमेश्वर हमारी बड़ाई करे।

सो, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के

वास्तव में उस समय घटी जब यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपनी देह और लोहू की यादगार को स्थापित करने के लिये प्रभु-भोज का आयोजन किया था। उस समय यीशु ने उठकर अपनी कमर से एक अंगोछा बांधा और फिर उसने एक बरतन में पानी लिया, और फिर वह अपने चेलों के पैर धोने लगा। और जब वह उनके पांव धो चुका, तो उसने उनसे पूछा, कि क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? और फिर उसने स्वयं उनसे कहा, कि, "तुम मुझे गुरू, और प्रभु कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए। क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिया है, कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।; (यूहन्ना १३ : १२—१५)। अर्थात् एक-दूसरे पर बड़ा बनने की कोशिश मत करो, परन्तु एक दूसरे की सेवा किया करो।

यहां यीशु के स्वभाव में सेवा के अतिरिक्त हम एक अन्य बात यह भी देखते हैं, कि उसे अपनी बड़ाई की कोई चिन्ता नहीं थी। वह अपने आपको ऊंचा नहीं उठाना चाहता था। वह हमेशा नम्र और दीन बनकर रहना चाहता था। अपने प्रत्येक कार्य और उपदेश का श्रेय वह परमेश्वर को देता था। कितना भिन्न था यीशु अन्य लोगों से! यद्यपि वह परमेश्वर का पुत्र था, वह सामर्थपूर्ण मनुष्य था, किन्तु उसने अपनी प्रशंसा कभी नहीं चाही। एक बार जब एक मनुष्य उसके पास आकर उसे "उत्तम गुरु" कहकर सम्बोधित करने लगा, तो यीशु ने उससे कहा, कि तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? क्योंकि कोई उत्तम नहीं, केवल एक है, अर्थात परमेश्वर। (मरकुस १०:१८)। कितना भिन्न था यीशु अन्य लोगों से! इतना महान् होते हुए भी उसने कभी किसी ऐसे नाम से कहलाना नहीं चाहा जिस पर केवल परमेश्वर का अधिकार है। और यही बात उसने अपने चेलों को

जीवन में सेवा का भी एक मुख्य स्थान था । हम कहीं भी उसके सम्बन्ध में ऐसा नहीं देखते कि वह एक जगह बैठा या लेटा हुआ है और उसके चेले उसकी सेवा-टहल कर रहे हैं। इसके विपरीत हम यह देखते हैं, कि वह जगह-जगह जाकर उपदेश दे रहा है, भलाई और धर्म के काम कर रहा है। एक जगह उसके सम्बन्ध में हम पढ़ते हैं, कि, "यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।" (मत्ती ४:२३)। यीशु पृथ्वी पर वास्तव में एक सेवक की नाईं था। यह उपदेश देने के बाद, कि जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। बाइबल आगे उसके सम्बन्ध में हमें इस प्रकार बताती है, "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।" (फिलिप्पियों २ : ६, ७)। यीशु पृथ्वी पर एक याजक या पादरी या गुरू के समान नहीं रहा, परन्तु उसने अपना जीवन एक दास या एक सेवक की तरह बिताया।

एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि उसके चेले एक बार आपस में यह वाद-विवाद करने लगे, कि हम में से बड़ा कौन है ? यीशु ने उनकी बात सुनकर उनसे कहा, "कि अन्य जातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होना; बरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाईं और जो प्रधान हैं, वह सेवक की नाईं बने। क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा है या वह जो सेवा करता है ? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है ? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं।" (लूका २२ : २५—२७)। यह घटना

भीड़ को भोजन खिलाकर तृप्त किया, तो सबसे पहिले उसने प्रार्थना की । (यूहन्ना ५:११)। इसी प्रकार जब उसने चार दिन के मरे लाज़र को कब्र में से बुलाकर ज़िन्दा किया, तो उसने पहिले प्रार्थना करी। (यूहन्ना ११:४१,४२) । यानि प्रार्थना यीशु का जीवन था, यह उसका स्वभाव था। एक मनुष्य होने के सबब वह अपने जीवन में सबसे पहिला स्थान परमेश्वर को देता था । वह उसके ऊपर आश्रित रहना चाहता था । न केवल अपने पूरे प्रचारकाल के समय में ही यीशु ने प्रार्थना की, परन्तु हम देखते हैं, कि जब उसकी मृत्यु का समय निकट आ गया, तो वह अपने चेलों को साथ लेकर गतसमनी नाम के एक स्थान पर गया और वहाँ एकान्त में जाकर प्रार्थना करने लगा। और वहां उसने यह प्रार्थना की, कि हे पिता, जो दुख मैं उठाने जा रहा हूं वह बहुत ही बड़ा है, परन्तु तौभी मेरी नहीं, किन्तु तेरी ही इच्छा पूर्ण हो। और वह उस समय तक प्रार्थना करता रहा, जब तक कि उसको पकड़नेवाले उसे लेने नहीं आ गए। (मत्ती २६; यूहन्ना १७) । और जब वे लोग उस पर झूठे दोष लगा रहे थे और अत्याचार कर रहे थे और उसे क्रूस पर चढ़ा रहे थे, तौभी वह उनके लिए परमेश्वर से यह कहकर प्रार्थना कर रहा था, कि हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। (लूका २३ : ३४) । सो, मित्रो, आरम्भ से अन्त तक यीशु के सम्बन्ध में हम देखते हैं कि उसके जीवन में प्रार्थना करने का एक बड़ा ही विशेष स्थान था। और यही उसने लोगों को अपने उपदेश में भी सिखाया। उसने प्रार्थना के विषय में अनेक शिक्षाएं दीं, और बहुतेरे दृष्टान्तों के द्वारा उसने प्रार्थना के महत्व को लोगों को सिखाया। और उसने कहा कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए । (लूका १८ : १) ।

परन्तु यीशु न केवल प्रार्थना करनेवाला मनुष्य था, लेकिन उसके

५

यीशु का स्वभाव

मित्रो:

आज हम अपने पाठ में प्रभु यीशु मसीह के स्वभाव के ऊपर विचार करेंगे। ऐसा महान था यीशु का स्वभाव, कि बाइबल उपदेश देकर कहती है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" (फिलिप्पियों २:५)। अर्थात्, यीशु का स्वभाव अपनाने योग्य है। सबसे पहिली बात यीशु के स्वभाव के सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि उसके जीवन में प्रार्थना का एक बहुत बड़ा महत्त्व था। बाइबल हमें बताती है, कि जब यीशु ने उपदेश देना आरम्भ किया तो उसकी आयु लगभग तीस वर्ष की थी। परन्तु उपदेश देना आरम्भ करने से पहिले, हम देखते हैं, कि यीशु ने यूहन्ना से यह कहकर बपतिस्मा लिया, कि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। और जब वह बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया तो लिखा है, कि वह प्रार्थना कर रहा था। (मत्ती ३:१५,१६; लूका ३:२१,२३)। एक अन्य स्थान पर लिखा है, कि भोर को दिन निकलने से पहिले, वह उठकर निकला और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा। (मरकुस १:३५)। प्रार्थना करना यीशु का स्वभाव था। इसलिये लिखा है, कि वह जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था। (लूका ५:१६)। यीशु का प्रत्येक काम प्रार्थना के साथ आरम्भ होता था। जब उसने केवल पांच रोटियों से लोगों की एक बहुत बड़ी

सब परमेश्वर के निकट धर्मी ठहरें और इस प्रकार उसके साथ हमारा मेल हो जाए। एक प्रकार से यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा हमारा कर्ज़ा चुका दिया। जब किसी मनुष्य के ऊपर कर्ज़ा होता है तो वह कर्ज़दार कहलाता है। परन्तु जब उसका कर्ज़ा चुक जाता है तो फिर वह कर्ज़दार नहीं कहलाता। ठीक ऐसे ही, जब तक मनुष्य पाप में रहता है वह परमेश्वर की दृष्टि में पापी कहलाता है। परन्तु जब उसके पाप क्षमा हो जाते हैं तो फिर वह पापी नहीं परन्तु धर्मी ठहराता है। प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर इस प्रकार कहता है, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो, क्योंकि मसीह जो पाप से अज्ञात था उसी को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, ताकि हम उसके भीतर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२०,२१)। क्योंकि मसीह हमें धर्मी ठहराने के लिये हमारे स्थान पर क्रूस पर मर गया, इस कारण उसके भीतर हम परमेश्बर के निकट धर्मी ठहरते हैं। परन्तु मसीह के भीतर आने के लिये हमें क्या करना है? इस सम्बन्ध प्रेरित में बाइबल में गलतियों ३:२६,२७ में इस प्रकार कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर हैं, परमेश्वर के संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।" क्या आप ने मसीह को पहिन लिया है?

मित्रो, परमेश्वर चाहता है कि आप उसके साथ अपना मेल कर लें। इसलिये उसकी इच्छा है कि आप उसके पुत्र मसीह यीशु में विश्वास लाएं और अपने सब पापों से मन फिराएं और बपतिस्मा लेकर उसे पहिन लें अर्थात् उसके भीतर आ जाएं। क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नाश हो, परन्तु उसकी इच्छा है कि सारा जगत उद्धार पाए। और वह उद्धार हमें उसके पुत्र यीशु मसीह में मिलता है।

उसी की महिमा और प्रशंसा युगानुयुग तक होती रहे।

कहा, कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं। (यूहन्ना ८: ५१-५८)। यीशु ने यह नहीं कहा कि मैं था, परन्तु उसने कहा, कि मैं हूं, अर्थात् मैं वही हूं जो इब्राहीम से भी पहिले था। और एक अन्य स्थान पर हम पढ़ते हैं कि उसने कहा कि मैं अल्फ़ा और ओमिगा हूं, अर्थात् मैं आदि और अन्त हूं। सो इसमें कोई संदेह नहीं कि यीशु अनन्तकाल का पिता है। वह था, और मनुष्य बना, और मृत्यु के बाद फिर से जी उठा, और स्वर्ग पर वापस चला गया, और हमेशा तक विद्यमान रहेगा।

किन्तु, फिर भविष्यद्वक्ता के वचनानुसार वह शान्ति का राजकुमार है। एक अन्य स्थान पर यही भविष्यद्वक्ता यीशु के बारे में लिखकर यूँ कहता है, कि वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया और वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया और हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी। (यशायाह ५३: ५)। शान्ति का अर्थ है मेल। जब दो बैरी पक्षों के भीतर मेल हो जाता है तो शान्ति की स्थापना हो जाती है, और क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा ठीक ऐसा ही हुआ। यीशु की मृत्यु से पहिले प्रत्येक मनुष्य अपने पाप के कारण परमेश्वर का बैरी था, और आज भी प्रत्येक मनुष्य जो यीशु में नहीं है अपने पाप के कारण परमेश्वर का बैरी है। परन्तु यीशु की मृत्यु के कारण हमारा मेल परमेश्वर के साथ होता है। क्योंकि यीशु परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर हमारे पापों का प्रायश्चित करने को मरा। वह हमारे पापों के बदले में मरा; वह हमारे स्थान पर मरा। वह क्रूस के ऊपर घायल किया गया; वह कुचला गया; उस पर ताड़ना पड़ी, इसलिये नहीं कि वह इस योग्य था, परन्तु इसलिये क्योंकि परमेश्वर ने उसे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया। वह उसी की मनसा और उसी के होनहार के ज्ञान से इसलिये क्रूस पर मरा ताकि उसके बलिदान के कारण हम

किया, और यहाँ तक कि उसकी इच्छा पूरी करने के लिए उसने मृत्यु बल्कि क्रूस की मृत्यु भी सह ली। किसने ? उस यीशु ने जो वचन—परमेश्वर था, जो परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के स्वरूप में था ! इसीलिए हम देखते हैं, कि भविष्यद्वक्ता उसे, न केवल पराक्रमी परमेश्वर, परन्तु अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर कहकर सम्बोधित करता है। क्योंकि जब मनुष्य की सारी युक्तियां असफ़ल हो गईं, तो परमेश्वर ने मनुष्य का उद्धार इस अद्भुत युक्ति के द्वारा किया कि उसने अपने वचन को मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। और फिर उसने उस मनुष्य को एक क्रूस के ऊपर चढ़वाकर उसके बलिदान के द्वारा उसे सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया।

परन्तु फिर हम यह भी देखते हैं कि भविष्यद्वक्ता यीशु को अनन्तकाल का पिता कहकर सम्बोधित करता है। क्योंकि जैसे कि अभी हमने देखा कि यीशु और परमेश्वर एक हैं। यीशु मनुष्य बनने से पहिले वचन था और वचन परमेश्वर था। यीशु तथा परमेश्वर दो व्यक्तित्व हैं परन्तु विचार और मनसा में वे एक हैं. ठीक ऐसे ही जैसे कि मनुष्य और उसकी आत्मा। वे दो हैं, परन्तु एक हैं। परन्तु परमेश्वर अनन्त है, अर्थात वह अनन्तकाल तक बना रहेगा, उसका अस्तित्व कभी समाप्त न होगा। वह था और है और हमेशा तक रहेगा। एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं कि यीशु कुछ यहूदियों को उपदेश दे रहा था, और उसने उनसे कहा, कि यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा। यीशु की यह बात सुनकर उन यहूदियों को ठोकर लगी, और उन्होंने यीशु से कहा, कि इब्राहीम मर गया और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं किन्तु तू कहता है कि यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इब्राहीम से भी बड़ा है ? इस पर यीशु ने उनसे

क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, अर्थात् यीशु और परमेश्वर एक हैं। पृथ्वी पर यीशु के जन्म लेने से पहिले वह आदि से परमेश्वर के साथ था। क्योंकि बाइबल कहती है कि आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वही वचन परमेश्वर था। परन्तु मनुष्यों का उद्धार करने के लिए परमेश्वर का वह वचन एक मनुष्य के रूप में उत्पन्न हुआ। यही कारण है कि वचन जब देहधारी हुआ और मनुष्य बना तो वह परमेश्वर का पुत्र कहलाया। (यूहन्ना १ : १—१४)। प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर इस प्रकार कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २ : ५-८)। यहाँ हम देखते हैं कि प्रेरित उन लोगों को नम्रता तथा दीनता के बारे में उपदेश दे रहा है, और वह प्रभु यीशु का उदाहरण देकर कहता है कि उसने अपने आपको ऐसा दीन कर दिया कि परमेश्वर के स्वरूप पर होने पर भी, अर्थात् परमेश्वर के समान होने पर भी उसने परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको खाली कर दिया, शून्य कर दिया, यानी सिफ़र या ज़ीरो कर दिया, अर्थात् उस महिमा और महानता को जो उसे परमेश्वर के साथ प्राप्त थी वह स्वर्ग पर छोड़कर पृथ्वी पर उतर आया। और मनुष्य के स्वरूप में होकर उसने एक दास की नाईं जीवन व्यतीत किया, अर्थात् परमेश्वर की हर एक आज्ञा का पालन

का उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह मरियम नाम की उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो इब्राहीम के वंश से थी। परन्तु जब परमेश्वर ने इब्राहीम को आशीष दी थी तो उस समय उसका नाम अब्राम था। (उत्पत्ति १२ : १—३)। किन्तु परमेश्वर ने अब्राम से कहा, कि अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा परन्तु तेरा नाम इब्राहीम होगा (उत्पत्ति १७:५), अर्थात् बहुतों का पिता। सो एक बार फिर हम देखते हैं कि नाम मनुष्य के स्वभाव तथा व्यक्तित्व को दर्शाता है।

आज हम अपने पाठ में इसलिए कुछ ऐसे नामों को देखने जा रहे हैं जो हमें बाइबल में यीशु मसीह के बारे में मिलते हैं। यह तो हम जानते ही हैं कि आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रभु यीशु मसीह का जन्म परमेश्वर की उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार हुआ था जिन्हें उसके भक्तों ने परमेश्वर की प्रेरणा से पवित्र बाइबल की पुस्तकों में मसीह के जन्म से सैंकड़ों वर्ष पूर्व लिखा था। उन अनेक भविष्यद्वक्ताओं में से एक का नाम यशायाह था। अपनी पुस्तक में एक जगह लिखकर यशायाह ने यीशु मसीह के बारे में इस प्रकार कहा था, "क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।" (यशायाह ९ : ६)। यहाँ हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु को तीन विशेष नामों से सम्बोधित किया गया है। अर्थात, अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, और अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार।

यहाँ मैं सबसे पहिले आपके सामने इस बात को रखना चाहता हूं कि यीशु अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर है। और हम देखते हैं कि यीशु को यहाँ परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया है।

४

यीशु के अद्भुत नाम

मित्रो :

बहुत सी ऐसी वस्तुओं में से जो हम सबके पास हैं, एक वस्तु है, नाम। हम सबका कोई न कोई नाम है। और हममें से कुछ ऐसे भी हैं जिनके एक से अधिक नाम हैं। नाम एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण वस्तु है। बाइबल का लेखक इस विषय में एक जगह कहता है, कि अच्छा नाम बड़े धन से भी अधिक चाहने योग्य है (नीतिवचन २२ : १), और अनमोल इत्र से भी उत्तम है। (सभोपदेशक ७ : १)। हमारा नाम चाहे कुछ भी हो परन्तु उसके लिए हम सदा आदर और अच्छाई ही देखना तथा सुनना पसन्द करते हैं। जब किसी परिवार में एक बालक का जन्म होता है, तो परिवार के सदस्य उस बालक को अपनी-अपनी पसन्द के अलग-अलग नाम देने लगते हैं। यदि वह बालक मोटा है तो उसे गोलू कहने लगते हैं, और यदि उसका थोड़ा रंग साफ नहीं है तो उसे कालू कहने लगते हैं। यानी नाम मनुष्य के स्वभाव तथा व्यक्तित्व को भी प्रगट करता है। जैसे, यदि कोई लम्बा है तो लोग उसे लम्बू कहने लगते हैं, और यदि कोई छोटा है तो लोग उसे गट्टू कहने लगते हैं। बाइबल में हम इब्राहीम नाम के एक मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं। इब्राहीम परमेश्वर से डरता था और उस पर पूरा भरोसा रखता था। इब्राहीम से परमेश्वर ने यह वाचा बाँधी थी कि उसके द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे। और परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष बाद उस समय पूरी हुई जब जगत

यीशु तो पाप से हमारा उद्धार करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया, परन्तु हम उसमें विश्वास लाकर, और पापों से अपना मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। प्रभु अपने वचनानुसार चलने के लिये आपको समझ दे।

आश्चर्यजनक कार्यों के द्वारा यीशु ने इस बात का प्रमाण दिया कि वही वह मसीह है जिसके जगत में आने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। नए नियम में हम यीशु के अनेक सामर्थपूर्ण कामों के बारे में पढ़ते हैं; हम उसकी शिक्षाओं और उसके उपदेशों के बारे में पढ़ते हैं। जब लोगों ने उस से पूछा कि क्या तू ही वास्तव में मसीह है ? तो उसने उनसे कहा कि जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं। (यूहन्ना १० : २४, २५)। अपने सम्बन्ध में एक जगह उसने यों कहा, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। बाइबल का नया नियम हमें बताता है, कि यीशु परमेश्वर की योजना अनुसार पाप से जगत का उद्धार करने को पृथ्वी पर आया। और वह परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया। (रोमियों ५ : ८; १ यूहन्ना ४ : १०)। नया नियम हमें बताता है, कि जब हम यीशु मसीह में यह विश्वास लाते हैं, कि वह हमारे पापों के बदले में क्रूस पर मारा गया। और जब हम अपने सब पापों से मन फिराते हैं, और अपने पापों की क्षमा के लिये पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से या अधिकार से बपतिस्मा लेते हैं, तो परमेश्वर यीशु के कारण हमारे पापों को क्षमा करता हैं और तब वह हमें पवित्र लोगों की उस मंडली में मिला लेता है जो यीशु मसीह की कलीसिया है। पवित्र बाइबल में लिखा है कि जो लोग मसीह यीशु में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, क्योंकि परमेश्वर ने यीशु मसीह की मृत्यु के कारण उनके सब पाप क्षमा कर दिए हैं। (रोमियों ८, १; गलतियों ३ : २७)।

इस प्रकार उद्धार प्राप्त करके जब हम मसीह की कलीसिया में मिल जाते हैं, तो फिर हम अपना जीवन यीशु मसीह की उन शिक्षाओं तथा उपदेशों पर चलकर निर्वाह करते हैं जिन्हें हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। इसका कारण यह है, कि यीशु मसीह एक दिन

फिर वापस आएगा। जबकि बाइबल के पुराने नियम ने यीशु के जगत में जन्म लेने के सम्बन्ध में घोषणा की थी। नया नियम हमें बताता है, कि यीशु इस जगत में आया और जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर अपना बलिदान देने के बाद, वह फिर से जी उठा। और अपने चेलों को उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा देकर वह स्वर्ग पर वापस चला गया। किन्तु स्वर्ग पर वापस जाने से पहिले यीशु ने अपने अनुयायियों से यह प्रतिज्ञा की थी कि एक दिन वह फिर से वापस आएगा, और उन सबको जो उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं, आकर अपने साथ स्वर्ग में ले जाएगा। (यूहन्ना १४ : १—३; प्रकाशितवाक्य २ : १०)। सो बाइबल का नया नियम हमें बताता है, कि यीशु एक दिन फिर से वापस आ रहा है। पहिली बार वह जगत का उद्धार करने को आया था, परन्तु अब की बार वह जगत का न्याय करने को आ रहा है। (यूहन्ना ३ : १७; प्रेरितों १७ : ३०, ३१)। पहिली बार वह अपने आत्मिक राज्य अर्थात् अपनी कलीसिया को स्थापित करने को आया था, परन्तु अब की बार वह अपने उस राज्य को अपने साथ ले जाने के लिये आ रहा है। (मत्ती १६ : १८, १९; मरकुस ९ : १; १ कुरिन्थियों १५ : २४, २५; यूहन्ना १४ : १—३)।

मित्रो, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमारा उद्धार करने के लिए अपने पुत्र यीशु को हमारे लिए दे दिया। उसका धन्यवाद हो कि हम यीशु के द्वारा फिर से अपना मेल उसके साथ कर सकते हैं। परन्तु यदि फिर भी हम में से कोई परमेश्वर के न्याय के दिन उद्धार न पाए, तो यह कितनी बड़ी शोकपूर्ण बात होगी। इसलिये, आज हमारे सामने यह एक बड़ा ही गम्भीर प्रश्न है, कि यदि यीशु आज या इसी हफ्ते में या इसी महीने में न्याय करने के लिये वापस आ जाए तो क्या हम सब उससे मिलने के लिये तैयार हैं ??